www.thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 8 अंक 49 12 से 18 दिसम्बर, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 मा. शु.-10

Nelson Mandela's death is the death of the Gandhi of our Times

- Swami Agnivesh

New Delhi, 6th Dec 2013 : "Death is something inevitable. When a man has done what he considers to be his duty to his people and his country, he can rest in peace. I believe I have made that effort and that is, therefore, why I will sleep for the eternity." Nelson Mandela 1996

There are only a very few people who have a profound effect on mankind and Nelson Mandela was one of those people. Like Gandhijee a believer in forgiveness and non-violent co-existence of all races and creeds Mateeba will always be remembered for leading the emancipation of South Africa from white minority rule and served as his country's first black president, becoming an international emblem of dignity and forbearance, who died Thursday night at the age 95. Globally respected as a symbol of resistance against injustice, Nelson Mandela brought an end to the much-despised apartheid regime in South Africa while spreading the spirit of freedom in the rest of Africa. Inspired by Mahatma Gandhi's principle of Ahimsa, especially his campaign in South Africa, Mandela also preached against violence.

When Nelson Mandela was released from prison in 1990, South Africa was a catastrophe waiting to happen. Had Nelson been anything but Mandela – anything but that exquisitely modulated blend of common sense, compassion and authority – the whole place could well have gone up in flames.

I remember the days leading up to the 1994 elections, when Zulu impis were marching through the streets of downtown Johannesburg and die-hard racists were planting bombs and threatening a race war. Things were falling apart and the center wasn't holding; South Africa was on the brink of civil war.

दिल्ली में गोल डाकखाने के पास स्थित चर्च में सर्वधर्म संसद के तत्वावधान में विश्व प्रसिद्ध दिवंगत नेता नेल्सन मंडेला को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में मोमबत्ती जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर जैनमुनि लोकेश तथा विवेक मुनि,, आर्यनेता पं. माया प्रकाश त्यागी, ब्र. राजसिंह, गुरुद्वारा बंगला साहिब के अध्यक्ष श्री परमजीत सिंह चण्डोक, पादरी डोमनीक इमेनूअल, आर्य युवा नेता मनु सिंह जी सहित सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

It's no exaggeration to say that one man held it together. Had it not been for Mandela – for his dedication to the proposition that people can live together despite their differences, as well as for the profound influence he had over black, and increasingly white, South Africans – things might have turned out very, very badly. One man can – and did – make a difference. I was just there in Durban a couple of days ago and it was heartening to see South Africa slowly transform into a composite world power- this is all due to Madeeba, who was not only the Gandhi but also the Ambedkar of South Africa.

It's depressing to think of how many lives might have been saved, had Mandela been able to play a legitimate political role during the 27 years he spent in prison. How millions of kids might have been educated and groomed for productive lives, instead of being thrust into poverty and crime. How so many of the problems facing South Africa today might have been forestalled, had an evolutionary political.

The socio-political leaders of our country should take out a leaf from Mandela's great but simple life and learn from his message and struggles - how to evolve the society towards equanimity and social justice while not only recognizing but also celebrating the various differences of caste, creed, gender or religion.

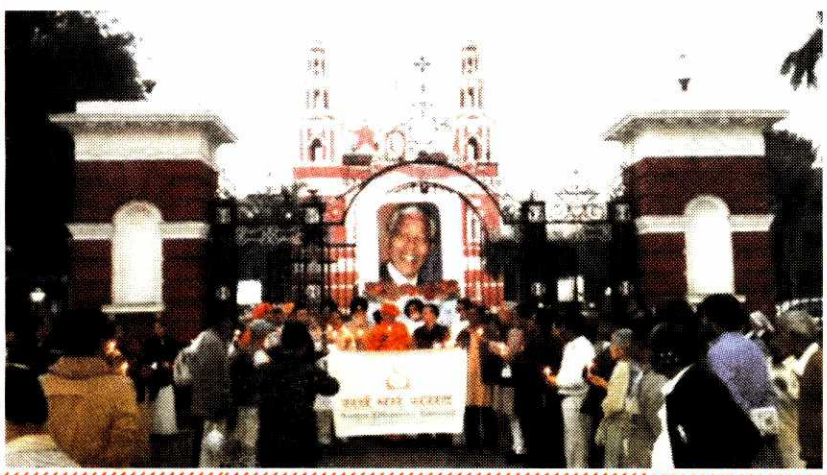

मुजफ्फरनगर में साम्प्रदायिक सद्भावना के उद्देश्य से
नववर्ष के प्रथम दिवस 1 जनवरी को
प्रसिद्ध समाजसेवी स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में
हरिद्वार से लेकर इण्डियागेट दिल्ली तक
विशाल मानव श्रृंखला का आयोजन

1 जनवरी, 2014 को मुजफ्फरनगर में साम्प्रदायिक सद्भावना को लेकर हरिद्वार से लेकर इण्डिया गेट दिल्ली तक दोपहर 12 से 1 बजे एक विशाल मानव श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर देश की जानी-मानी हस्तियाँ उपस्थित रहेंगी। ज्ञातव्य हो कि पिछले दिनों एक मामूली सी बात को लेकर मुजफ्फरनगर में साम्प्रदायिक हिंसा भड़क उठी थी। इस हिंसा में कम से कम 50 लोग दोनों पक्षों से मार दिये गये तथा 50 हजार लोग घर से बेघर हो गये। जिनमें से लगभग 20 हजार लोग अभी भी तम्बुओं में निवास कर रहे हैं। यह अत्यन्त दु:खद है। दोनों वर्गों की बढ़ती हुई दूरियों को पाटने के लिए अधिक से अधिक संख्या में पहुँच कर मानव श्रृंखला में हिस्सा लें तथा साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाने में अपना योगदान प्रदान करें।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वैदिक समाजवाद में चिन्ताओं का समाजीकरण

— स्वामी अग्निवेश

प्रस्तुत लेख स्वामी की जी कलम से 1972 में लिखा गया था और उस समय ''राजधर्म'' में प्रकाशित हुआ था। समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिये संघर्षरत स्वामी जी ने समाज को झकझोर देने वाले कई लेख लिखे जिसमें आओ धर्म की चर्चा करें, आर्य समाज और राष्ट्रवाद, वैदिक समाजवाद और भ्रष्टाचार, महर्षि दयानन्द और वैदिक समाजवाद बहुत चर्चित हुए। उक्त लेख तथा अन्य कई लेख बाद में ''महर्षि दयानन्द का वैदिक समाजवाद'' नामक पुस्तक में संग्रहीत कर प्रकाशित किये गये। स्वामी जी की कलम से लिखे गये यह क्रान्तिकारी विचार समाज में काफी चर्चा का विषय बने। अगर आप इन क्रान्तिकारी विचारों से लाभ उठाना चाहते हैं तो यह पुस्तक अवश्य पढ़ें। इस पुस्तक का मूल्य केवल मात्र 15 रुपये रखा गया है। पुस्तक मंगाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 तथा 7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली-1 से दूरभाष नं.-011-23367943 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

वैदिक समाजवाद में ठीक इसके विपरीत एक चिन्ता मुक्त जीवन का वरदान मिलता है। दूसरे शब्दों में उत्पादन के साधनों के समाजीकरण के साथ-साथ राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक की मूलभूत चिन्ताओं का भी समाजीकरण कर दिया जाता है। उपर्युक्त प्रकार की चिन्ताओं को व्यक्ति के सिर से उतार कर समाज अपने ऊपर ले लेता है। मसलन बच्चों की पढ़ाई का मामला है। पूँजीवादी व्यवस्था में प्रत्येक माँ-बाप के ऊपर यह एक बड़ी भारी चिन्ता का बोझ है - इस बोझ को वैदिक समावाद ही दूर कर देता है और राष्ट्र के प्रत्येक बालक-बालिका की शिक्षा-दीक्षा की जिम्मेदारी व्यक्ति के ऊपर न होकर सारे राष्ट्र के ऊपर होती है। बालक की पढ़ाई-लिखाई के साथ उसके रोटी, कपड़े, निवास, पुस्तकादि सारी चिन्ताओं से माता-पिता मुक्त हो जाते हैं। इसके बाद आती है रोजगार की चिन्ता। आज लाखों पढ़े-लिखे युवक बेरोजगारी के शिकार होकर स्वयं भी दु:खी हैं और माता-पिता पर भी बोझ बने हुए हैं। वैदिक समाजवाद रोजगार का मौलिक अधिकार प्रदान कर एक बहुत बड़ी चिन्ता से लोगों को मुक्त कर देता है। इसी तरह बुढ़ापे की पेन्शन निश्चित हो जाने से बुढ़ापे की चिन्ताओं से मुक्ति मिलती है।

प्रश्न :- वैदिक समाजवाद में सम्पत्ति के समाजीकरण वाली बात सिद्धान्त में बहुत ठीक होते हुए भी व्यवहार में बिल्कुल गलत है। कोई भी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति छिनवाने के लिए राजी नहीं है। गरीब से गरीब आदमी भी अपनी झोपड़ी पर अपना व्यक्तिगत अधिकार मानता है और यदि वह झोपड़ी उससे छीन ली गई तो उसे बहुत कष्ट होगा। इसी तरह प्रत्येक किसान को अपनी जमीन से बेहद लगाव होता है चाहे उसके पास खेत के नाम पर दो बीघे जमीन ही क्यों न हो पर वह अपने आपको उस जमीन का स्वामी समझता है और इस स्वामित्व को वह किसी भी कीमत पर छोड़ने के लिए तैयार नहीं। यदि आप उससे जबरदस्ती छीनना चाहेंगे तो वह अपने अधिकार की रक्षा के लिए अपने प्राण तक देने के लिए तैयार हो जायेगा। यही हालत छोटे से छोटे दुकानदार की है। ऐसी स्थिति में आपका समाजवाद तो कभी लागू ही नहीं हो पायेगा - केवल वेद या राजधर्म के पन्नों में सुरक्षित रहेगा जब तक दीमक उसे न चाट लें।

उत्तर :- सच बात तो यह है कि व्यावहारिकता की कमी वैदिक समाजवाद में नहीं है अपितु आपके सोचने में है। सबसे पहले तो आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप गरीबों को यह बहकाने की कोशिश न करें कि वैदिक समाजवाद में उनकी सारी सम्पत्ति का समाजीकरण होगा और उनकी झोंपड़ी, उनके कपड़े और उनके बिस्तर आदि सरकार छीन लेगी। वैदिक समाजवाद में उत्पादन के साधनों का समाजीकरण किया जायेगा। उपभोग के साधनों पर तो व्यक्ति का ही स्वामित्व रहेगा। रहने का मकान, कपड़े, बिस्तर, खाने-पीने की चीजें और इसी तरह की बहुत सी वस्तुएँ उपभोग के साधन हैं - इन साधनों के द्वारा एक आदमी दूसरे आदमी का शेषण नहीं कर सकता। अतएव इनके समाजीकरण का कोई अर्थ नहीं है। हाँ, पारिश्रमिक और उपभोग की वस्तुओं का वितरण इस ढंग से होगा कि मूलभूत आवश्यकताएँ सबकी पूरी हों और विषमता 1 और 10 के अनुपात से अधिक न हो। वैदिक समाजवाद में उत्पादन के सभी साधनों का जिसमें खेत, खदान, फैक्ट्री आदि आते हैं, अवश्य समाजीकरण किया जायेगा। कुछ पूँजीवाद के निकृष्ट दलाल जानबूझकर गरीब किसान मजदूरों को बरगलाते फिरते हैं कि समाजवाद में तुम्हारी सारी चीजें, घर, बिस्तर, कपड़े-लत्ते सरकार ले लेगी और तुम एक प्रकार से सरकार के गुलाम बन जाओगे। रोटी होटल में खानी पड़ेगी और घण्टी बजने पर उठना पड़ेगा। डंडा मारकर तुमसे काम लिया जायेगा और जरा भी विरोध किया तो शूट कर दिया जायेगा आदि-आदि। ये दुष्ट यहाँ तक प्रचार करते हैं कि कोई भी, किसी की माँ, बहन, बहू, बेटी नहीं होगी और औरतों का भी समाजीकरण कर लिया जायेगा। समाजवाद को इतने गलत रूप में प्रस्तुत करने वाले ये पापात्मा भाग्यवाद के प्रचारकों से कम खतरनाक नहीं हैं और ऐसे व्यक्तियों के साथ कठोरता से निपटना चाहिए।

रहा सवाल छीनने का। समाजीकरण का अर्थ जो व्यक्ति छीना करता है वह भी उसे गलत रूप में प्रस्तुत करता है। समाजीकरण का वास्तविक अर्थ सम्पत्ति का छीनना नहीं है वरन सम्पत्ति के स्वामियों को उनका स्वामित्व दिलाना है। इस अर्थ में समाजीकरण देश के लोगों को गुलाम नहीं बनाता, मजदूर भी नहीं बनाता, वरन् समाजीकरण देश की मेहनतकश जनता को देश का और देश के तमाम् उत्पादन के साधनों का मालिक बनाता है। पूँजीवादी व्यवस्था में कमेरा (काम करने वाला) तबका तो गुलाम की तरह छटपटाता रह जाता है और लुटेरा तबका मालिक की तरह दनदनाता चला जाता है - इन लुटेरों को समाप्त करके, गुलामों को मुक्ति दिलाकर उन्हें मालिक बनाना ही वैदिक समाजवाद के समाजीकरण का पावन लक्ष्य है।

जहाँ तक समाजीकरण की व्यावहारिकता का सवाल है, अथवा इसके विरोध का सवाल है, वह भी समझने की बात है। कहा गया कि समाज का हर व्यक्ति समाजीकरण का जी जान से विरोध करेगा तो समाजीकरण होगा कैसे?प्रश्न होता है कि समाजीकरण का हर व्यक्ति विरोध क्यों करेगा?विरोध तो वही व्यक्ति करेगा जिसके पास शोषण की सम्पत्ति अथवा लूट का माल इकट्ठा हो रहा है - बाकी जिनके पास कुछ भी नहीं अथवा नगण्य साधन हैं, वे क्यों विरोध करेंगे?यह सबको पता है कि हमारे देश की कुल जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा बेचारा गरीब मजदूर है जिसके पास उत्पादन का कोई साधन नहीं और उपभोग के साधनों के नाम पर उसके पास केवल इतना ही है जितने से वह कुछ समय जिन्दा रहकर 'मालिक' की गुलामी निभाता रहे। लगभग यही हालत है छोटे तबके के किसान की। वास्तविकता तो यह है कि जिस किसान के पास आज दो-चार एकड़ जमीन है, उसकी हालत मजदूर से भी गई गुजरी है - प्राय: ऐसे सभी छोटे किसानों की धरती गिरवी रखी हुई है। पति-पत्नी और बच्चे सारा कुनबा सुबह से शाम साल भर जानवर की तरह खटता है तो जाकर मुश्किल से सूखे टिक्कड़ों का ढंग बन पाता है और यह भी तब तक जब तक 'इन्द्र देवता' की उस पर कृपा बनी रहे। कुछ इसी ढंग का हाल उन निचले तबके के वेतन भोगी कर्मचारियों, अध्यापकों आदि का है जो बुद्धिजीवी का लबादा ओढ़े इस पूँजीवादी व्यवस्था की कमर तोड़ मंहगाई और भ्रष्टाचार की सड़ान्ध में कीड़ों की तरह बिलबिला रहे हैं। निचले तबके का व्यापारी जैसे रेहड़ी वाला, खोमचे वाला, चाय और पान की दुकान वाला, नमक-तेल धनियाँ बेचने वाला भी कुल मिलाकर बुरी तरह पिस रहा है। इस तरह सिवाय चन्द धन्ना सेठों के और उनके कुछ मध्यवर्गीय दलालों के कोई भी आज सुखी नहीं है। 125 करोड़ की जनता के इस गरीब देश में 75-76 परिवार ही ऐसे हैं जिन्होंने वर्तमान शासक वर्ग के साथ साँठ-गाँठ करके देश के 54.6 प्रतिशत उत्पादन के साधनों पर कब्जा किया हुआ है। और बाकी की 45.4 प्रतिशत सम्पत्ति को 125 करोड़ लोगों में आपस में कुत्तों की तरह झगड़ने के लिए छोड़ रखा है। यदि उत्पादन के समस्त साधनों का समाजीकरण कर लिया जाता है तो नुकसान किसका होगा?निश्चित रूप से केवल उन मुट्ठी भर लोगों का होगा जो आज कानून और व्यवस्था के नाम पर, प्रजातन्त्र और समाजवाद के नाम पर इस देश की गरीब मेहनतकश जनता का खटमलों की तरह खून चूस-चूसकर मोटे हो रहे हैं। वैदिक समाजवाद इन खटमलों से अपना खून वापस नहीं माँगता अपितु इन खटमलों को उनके अण्डे समेत नष्ट करना चाहता है, इन लुटेरों को नेस्तनाबूद करना चाहता है, और एक प्रचण्ड समाजवादी क्रान्ति के माध्यम से इस देश के आर्यों को, इस राष्ट्र के श्रमिकों को, इस धरती के मेहनतकश बेटों की इस धरती का असली राजा बनाकर उनका राज्याभिषेक करना चाहता है।

यदि उत्पादन के समस्त साधनों का समाजीकरण कर लिया जाता है तो नुकसान किसका होगा? निश्चित रूप से केवल उन मुट्ठी भर लोगों का होगा जो आज कानून और व्यवस्था के नाम पर, प्रजातन्त्र और समाजवाद के नाम पर इस देश की गरीब मेहनतकश जनता का खटमलों की तरह खून चूस-चूसकर मोटे हो रहे हैं। वैदिक समाजवाद इन खटमलों से अपना खून वापस नहीं माँगता अपितु इन खटमलों को उनके अण्डे समेत नष्ट करना चाहता है, इन लुटेरों को नेस्तनाबूद करना चाहता है, और एक प्रचण्ड समाजवादी क्रान्ति के माध्यम से इस देश के आर्यों को, इस राष्ट्र के श्रमिकों को, इस धरती के मेहनतकश बेटों की इस धरती का असली राजा बनाकर उनका राज्याभिषेक करना चाहता है।

एक बात और बता दूँ आपको। ये विचार महज ख्याली पुलाव नहीं है जिन्हें आप या आपके परवरदिगार वेद और राजधर्म के पन्नों पर दीमक बनकर चाट जायें। क्रान्ति की आग सुलग चुकी है और बड़ी तेजी से इसकी चिन्गारियाँ देश के कोने-कोने में बैठे युवा मन-मस्तिष्कों को आन्दोलित कर रही हैं। अन्दर ही अन्दर धधक रही इस क्रान्ति की भीषण आग को अब किसी भी कीमत पर बुझाया नहीं जा सकता, दबाया नहीं जा सकता। उचित अवसर पर उचित नेतृत्व पाकर यह एक प्रचण्ड ज्वालामुखी की तरह विस्फोट करेगा और सदियों से जमा हुए कीचड़ और सड़ी गली व्यवस्था को बाहर फेंक कर इस रत्नगर्भा धरती के अन्तस्तल से एक नये स्वर्णिम युग का सूत्रपात करेगा।

प्रश्न - माफ कीजिएगा मेरा प्रश्न तो जैसा का तैसा है। मैंने जो सवाल पूछा और उसके उत्तर में अभी जो आपने लच्छेदार भाषण दे डाला उससे यहाँ तक तो मैं सहमत हूँ कि इस देश की बहुसंख्यक जनता इतनी गरीब है कि उसके पास उत्पादन के कोई साधन नहीं हैं और यह वर्ग समाजीकरण का विरोध नहीं करेगा। बात भी ठीक है कि जिसके पास खुद कुछ नहीं है वह विरोध क्यों करे?इस वर्ग के लोगों को समाजीकरण से कुछ लाभ हो या न हो पर इन्हें इस बात का मजा तो जरूर आयेगा कि अगले का भी छिन गया। पर मेरा सवाल इन लोगों के लिए नहीं था। मैं तो यह जानना चाहूँगा कि जो किसान हजारों साल से चली आ रही परम्परा के अनुसार अपनी धरती के टुकड़े का स्वामी चला आ रहा है वह अचानक मेरे या आपके कहने से अपना स्वामित्व कैसे छोड़ देगा। बेशक उसके पास थोड़ी सी जमीन है और उसका मुश्किल से गुजारा हो रहा है पर वह उसे भी छोड़ना क्यों

शेष पृष्ठ 10 पर

www.thearyasamaj.org

अलविदा महात्मा मंडेला पूरी दुनिया हुई गमगीन

अनुकरणीय संस्मरण

साहस

हम नटाल प्रांत में एक प्रोपेलर विमान में थे। संभवतः ये छह सीटों वाला विमान था, जिस पर हम चार लोग सवार थे। विमान में बैठते ही मंडेला अखबार पढ़ने लगे। हम लोग अभी आधा सफर ही तय कर पाए थे कि मेरे सामने की सीट पर बैठे मंडेला ने खिड़की की ओर इशारा किया। बाहर का दृश्य देखकर तो मेरे होश ही उड़ गए। विमान का प्रोपेलर पंखा रुका पड़ा था। बड़े ही संयत स्वर में मंडेला ने कहा, 'रिचर्ड आप शायद पायलट को सूचित करना चाहेंगे कि प्रोपेलर बंद पड़ा है।' मैंने कहा, 'हां मदीबा।' पायलट को तब तक सब पता चल चुका था। उसने मुझसे कहा, 'जाकर बैठिए। एयरपोर्ट को सूचना दी जा चुकी है। वहां एंबुलेंस की व्यवस्था कर दी गई है। वे हवाईपट्टी पर फोम की कोटिंग करेंगे या फिर कुछ और।' मैंने मदीबा को सारी बात बताई। बड़ी गंभीरता से मेरी बात सुनने के बाद उन्होंने कहा, 'अच्छा' और दोबारा अखबार पढ़ने लगे। डर से मेरा बुरा हाल था। मैं उन्हें देखकर खुद को ढाढस बंधा रहा था। वे बिल्कुल शांत नजर आ रहे थे। विमान सुरक्षित उतर गया। कोई समस्या नहीं हुई। उनके चेहरे के भाव में कोई बदलाव नहीं था। बाद में एयरपोर्ट पर एक जगह कुछ देर के लिए सिर्फ हम दोनों थे, तब वे मेरी ओर देखकर बोले, 'अरे भाई, मैं तो ऊपर बिल्कुल ही डर गया था।' मैं जान गया कि इसी का नाम साहस है। साहस का मतलब न डरना नहीं है। साहस होता है डरते हुए भी निडर दिखना। आप जितना नहीं डरने का भाव लाएंगे, उतना ही निडर बनेंगे।

–रिचर्ड स्टेंजेल (मंडेला की आत्मकथा लिखने के दौरान 1993 में करीब साल भर उनके साथ रहे थे)

आत्मविश्वास

बैडनहोर्स्ट नामक एक नया जेल अधीक्षक नियुक्त हुआ था। बड़ा ही अशिष्ट व्यक्ति। वह जेल व्यवस्था को पूरी तरह बदल देना चाहता था। उसका कहना था कि जेल में किसी प्रकार की सख्ती नहीं बरती जाती है, कैदियों का जीवन आरामदायक है। उसके अनुसार जेल का माहौल यूनिवर्सिटी जैसा बन गया था। वह पढ़ने–लिखने की हमारी सुविधा को छीनने की तैयारी कर रहा था। उन्हीं दिनों तीन जजों का एक दल जेल व्यवस्था देखने के लिए आया। जज हमारी ओर आए और स्वाभाविक तौर पर नेल्सन से बात करने लगे यह जानने के लिए कि जेल में कैदियों को कैसे रखा जा रहा है। जेल अधीक्षक बैडनहोर्स्ट जजों की टीम के साथ था। जजों के सामने नेल्सन शिकायतों की लंबी लिस्ट गिना रहे थे। खास बात ये थी कि वे बैडनहोर्स्ट के सामने ही उसके आने के बाद जेल की बिगड़ी स्थिति को बयान कर रहे थे। तुनकमिजाज बैडनहोर्स्ट जजों के वहां होने की अनदेखी करते हुए चिल्लाया, 'नेल्सन तुम एक बात भूल रहे हो कि ये लोग तो यहां से चले जाएंगे, लेकिन हम दोनों यहीं साथ–साथ रहेंगे।' जजों को तो जैसे बिना प्रयास सबूत मिल गए। कुछ दिनों में ही बैडनहोर्स्ट का रॉबिन आइलैंड की जेल से तबादला हो गया। ये थी मंडेला की कार्यशैली। वे किसी से डरते नहीं थे। उन्हें अपने ऊपर पूरा भरोसा था। वे खुद को किसी से कमतर नहीं मानते थे, भले ही जेल के भीतर क्यों न हों।

–फिकिल बाम (रॉबिन आइलैंड में मंडेला के साथी कैदी रहे थे)

सदव्यवहार

जब मुझे रॉबिन आइलैंड जेल के बी सेक्शन में ले जाया गया तो एक दिन 17 साल के एक लड़के ने दरवाजा खोलते हुए मुझसे 'गुड मॉर्निंग' कहा। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं सोचता था कि जेल वार्डन का अभिवादन करने की कोई बाध्यता नहीं है, लेकिन जब उसने नेल्सन मंडेला का दरवाजा खोला और 'गुड मॉर्निंग, नेल्सन' कहा तो मेरे गुस्से का ठिकाना नहीं रहा। मैं सीधा मंडेला के पास गया और बोला, 'आप उस गोरे लड़के को नेल्सन बुलाने की इजाजत क्यों देते हैं, वो या तो आपको मिस्टर मंडेला बुलाए या सर। आप उसे नेल्सन बुलाने नहीं दे सकते। वो एक बच्चा है।' मंडेला की प्रतिक्रिया थी, 'अरे बेटे, जाने भी दो, चिंता मत करो। ये एक मामूली बात है। हम लोग जेल में हैं। हमें ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।'

–स्ट्रिनी मूडले (जेल में इस युवा अश्वेत आंदोलनकारी की कोठरी मंडेला की कोठरी के पास थी)

सहनशीलता

एक दिन अश्वेतों पर पुलिस अत्याचार की कोई खबर आई। खबर सुनने के बाद मंडेला का चेहरा तमतमा उठा। क्रोध को किसी तरह दबा कर वे फ्लैट में तेज–तेज चल रहें थे। कुछ ही देर में उनका गुस्सा फट पड़ा, 'वोल्फी, मैं बता रहा हूं, एक दिन आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत वाली नौबत आकर रहेगी।' मंडेला किस स्थिति में थे, ये साफ था। एक घंटे बाद वो मेरे पास आए और कंधा थपथपाकर कहा, 'वोल्फी, सचमुच मैं वैसा नहीं सोचता। मैं वैसा कभी नहीं कर सकता।'

– वोल्फी कोडेश (मंडेला के भूमिगत होने के दौरान डेढ़ महीने तक

जोहानिसबर्ग / वाशिंगटन / नई दिल्ली। रंगभेद के खिलाफ लंबा संघर्ष करने वाले महानायक नेल्सन मंडेला चिरनिद्रा में लीन हो गए। दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति के निधन से दुनिया भर में शोक की लहर दौड़ गई। शुक्रवार को मंडेला के घर के बाहर उनके चाहने वाले जमा होने लगे। नम आंखों से लोगों ने उनकी तस्वीर पर फूल चढ़ाए। कुछ अपनी भावनाओं पर काबू न रख सके और फफक कर रोने लगे। पूरे दिन उनकी यादों के सहारे बीता। लोगों को अब भी यकीन नहीं हो रहा था कि उनके प्यारे मदीबा इस दुनिया में नहीं रहे। दुनिया भर के देशों ने मंडेला के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कहा, 'मंडेला ने जो हासिल किया किसी व्यक्ति से उसकी उम्मीद नहीं की जा सकती।' अमेरिका का पहला अश्वेत राष्ट्रपति बनकर ओबामा ने खुद 2008 में इतिहास बनाया। वह मंडेला को श्रद्धांजलि देने अगले हफ्ते दक्षिण अफ्रीका जाएंगे। व्हाइट हाउस पर अमेरिका का राष्ट्रीय ध्वज झुका दिया गया।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून ने कहा कि वह एक मसीहा थे। उन्होंने दुनिया को दिखाया कि यदि सभी इंसाफ और इंसानियत के लिए एकजुट हों तो कुछ भी नामुमकिन नहीं। दलाई लामा ने कहा कि मुझे व्यक्तिगत तौर पर अपने प्यारे दोस्त की कमी महसूस होगी। निर्वासित तिब्बत सरकार के प्रधानमंत्री डॉ. लोबसंग सांग्ये ने कहा कि मंडेला ने मानवता के लिए अनूठा उदाहरण पेश किया। मंडेला को 'दक्षिण अफ्रीका का महात्मा गांधी' कहा जाता है। उनके सहयोगी एवं पूर्व आर्कबिशप डेसमंड टूटू ने कहा कि धरती की गहराई में छिपे हीरे की तरह वह जनवरी 1990 में सलाखों से बाहर निकले। बदले का नहीं उन्होंने शांति का संदेश दिया जिससे लोगों को प्रेरणा मिली।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने कहा कि विरोधियों को गले लगाना उनकी रणनीति नहीं जिंदगी जीने का अंदाज था। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा कि वह आधुनिक दौर के महान नेताओं में से थे। आधुनिक अफ्रीकी इतिहास का एक पूरा युग उनसे जुड़ा है। मशहूर अमेरिकी टीवी प्रस्तोता ओपरा विनफ्रे ने भी दुख व्यक्त करते हुए कहा कि मंडेला उनके हीरो रहे हैं। फेसबुक, ट्विटर समेत अन्य सोशल साइटों पर लोगों ने मंडेला को अपने–अपने तरीके से श्रद्धांजलि दी।

रक्तहीन क्रांति से दिलाया अश्वेतों को हक

मंडेला ने एक रक्तहीन क्रांति कर अफ्रीकी बहुसंख्यक अश्वेत लोगों को उनका हक दिलाया। इस परिवर्तन के दौरान हिंसा नहीं हुई क्योंकि वे बातचीत से समस्याएं हल करने में विश्वास करते थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले श्वेतों को समझाया कि वे देश में अल्पसंख्यक हैं इसलिए सत्ता की बागडोर बहुसंख्यक अश्वेतों के हाथों में होनी चाहिए। उनकी श्वेतों के साथ बाजचीत ने सत्ता के हस्तांतरण का मार्ग प्रशस्त किया और इसके लिए अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस को तैयार किया।

भारत से रहा गहरा नाता

1990 में जेल से रिहा होने के बाद मंडेला भारत आए और उन्होंने दोनों देशों के बीच सम्बन्धों का जिक्र करते हुए भारत को दक्षिण अफ्रीका की आजादी में साथ निभाने के लिए भारत को धन्यवाद दिया था। 19 अक्टूबर, 1990 को भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया।

मई 1994 में जब वह दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बने तो शपथ ग्रहण समारोह में भारत के उपराष्ट्रपति के. आर. नारायणन ने शिरकत की थी।

1999 में मंडेला को अहिंसा के वैश्विक आंदोलन के लिए गांधी–किंग एडवर्ड पुरस्कार से नवाजा गया। उन्हें यह पुरस्कार महात्मा गांधी की पौत्री इला गांधी ने दिया था।

2001 में गांधी शांति पुरस्कार लेने भी मंडेला भारत आए।

कुछ दिलचस्प बातें

मजाकिया मिजाज और हंसमुख स्वभाव

जोहानिसबर्ग। आम तौर पर छींटदार शर्ट पहनने वाले नेल्सन मंडेला मजाकिया मिजाज के बेहद हंसमुख व्यक्ति थे। एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा था, 'मुझे इस बात का हमेशा अफसोस रहेगा कि मैं हैवीवेट मुक्केबाजी में विश्व चौंपियन का खिताब नहीं जीत सका।' मंडेला फोटोग्राफरों के चहेते थे पर उन्होंने फ्लैश चमकाने से मना किया था। दरअसल, कारावास के दौरान चूना पत्थर खदान में काम करने के कारण उनकी आंखों की रोशनी कमजोर हो गई थी।

जब विवाह से भागे मंडेला

तीन विवाह करने वाले मंडेला के जीवन में एक दौर ऐसा भी आया, जब उन्होंने शादी से बचने के लिए 1941 में अपना घर छोड़ दिया ताकि वह रंगभेद के खिलाफ मुक्त हो कर संघर्ष कर सकें और परिवार की जिम्मेदारियां उनकी राह में रोड़ा न बनें।

मात्र 500 शब्द लिखने की आजादी

जब 13 जून 1964 से रॉबिन आइलैंड पर नेल्सन मंडेला की सजा शुरू हुई तो उन्हें हर छह महीनों में केवल 500 शब्दों का एक पत्र लिखने और प्राप्त करने की इजाजत थी। वह इतने कम शब्दों में ही अपने समर्थकों के लिए संदेश भी भेजते और अपने परिवार को अपना हालचाल भी । इसलिए काफ़ी चिंतन के बाद मंडेला खत लिखते थे।

रिलीज हुई आत्मकथा पर बनी फिल्म

जोहानिसबर्ग। मंडेला की मौत से एक हफ्ते पहले ही उनकी आत्मकथा पर बनी फिल्म 'मंडेला लांग वॉक टू फ्रीडम' रिलीज हुई थी। भारतीय मूल के दक्षिण अफ्रीकी फिल्म निर्माता अनंत सिंह ने इसे बनाने में करीब 20 साल गुजार दिए।

पिछले पृष्ठ का शेष

दंगे से हमेशा इंसान का नुकसान और इंसानियत शर्मिन्दा......

मुजफ्फरनगर के जिला पंचायत सभागार में आयोजित की गयी अमन-भाईचारा कांफ्रेंस

सांप्रदायिक बीमारी की जड़ है गंदी सियासत

नेशनल दुनिया

मुजफ्फरनगर में अमन-भाईचारा कान्फ्रेंस में महमूद मदनी, अग्निवेश व वीएम सिंह।

मुजफ्फरनगर। समाजसेवी स्वामी अग्निवेश ने कहा कि सांप्रदायिकता की बीमारी की जड़ गंदी सियासत है। इसे सबक सिखाना आम जनता का काम है। उन्होंने कहा कि जल्द ही सद्भाव का संदेश देने के लिए देवबंद से दिल्ली तक मानव श्रृंखला बनाने की योजना है। किसान नेता वीएम सिंह तथा जमीयत उलेमा के महासचिव मौलाना महमूद मदनी ने भी सामाजिक ताने बाने को बरकरार रखने के लिए एकता को पहली जरूरत बताया। इस दौरान सपा जिलाध्यक्ष ने जब इस मौके पर सरकार की उपलब्धियां गिनानी शुरू कर दीं तो मौलाना महमूद मदनी ने उन्हें टोका।

जिला पंचायत सभागार में जमीयत उलेमा द्वारा आयोजित अमन-भाईचारा कांफ्रेंस में स्वामी अग्निवेश ने कहा कि यहां एक माह पूर्व कुछ लोगों ने उन्हें बता दिया था कि दंगे होने वाले हैं। इन दंगों ने पूरी दुनिया में देश का सिर शर्म से नीचा किया है। हम किसी जमात में हों या मजहब में जब तक सच को सच कहने का हौसला नहीं करेंगे तब तक हमारा इस्तेमाल होता रहेगा। सियासत को दागदार बताते हुए उन्होंने कहा कि मलियाना कांड के बाद आंदोलन किया गया तो जांच कमेटी बैठी। इसकी रिपोर्ट इसलिए दबा ली गई क्योंकि उसमें पीएसी का जिक्र आया था।

स्वामी अग्निवेश ने कहा कि चुनाव नजदीक आए हैं तो बांटने की राजनीति शुरू हो गई है। इससे निकलना होगा। इंसानियत का दर्जा सबसे ऊंचा है। अब हम सभी का दायित्व है कि हिंदू-मुस्लिम का भेद भुलाकर इंसानियत को आगे बढ़ाने का काम करें तथा गांव-गांव में जाकर सभी को भाईचारे का संदेश दें तभी आपसी भाईचारा बढ़ेगा।

राष्ट्रीय किसान मजदूर संगठन के अध्यक्ष सरदार वीएम सिंह ने कहा कि नेता जब काम से दिल नहीं जीत पाते तो लड़ाकर जीतना चाहते हैं। पहले हमारे देश में पगड़ी पहने का रिवाज था, जो सम्मान की प्रतीक थी। अब टोपी पहनाई जाती है। नेता टोपी बदलकर सियासत करते हैं। उन्होंने कहा कि दोनों तरफ से जो दोषी हैं उन्हें खुद उसी समाज के लोग पकड़कर कानून को सौंपें तो समस्या का समाधान हो सकता है।

आरोप

- सरकार की उपलब्धियां गिनाने पर महमूद मदनी ने जिलाध्यक्ष को टोका

जमीयत उलेमा के राष्ट्रीय सचिव मौलाना महमूद मदनी ने कहा कि इंसाफ के बिना अमन नहीं हो सकता। यह जितनी सरकार की जिम्मेदारी है उतनी ही सब लोगों की भी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि हमारे बुजुर्गों ने फैसले के तहत यहां रहने का फैसला किया था। हमें इस पर गर्व है। चुनाव जीतने के लिए जिन लोगों ने सांप्रदायिकता भड़काने की खता की है उन्हें सजा जरूर मिलेगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व विधायक रतन पाल पंवार ने कहा कि जो कुछ हुआ है उसे भूल कर एक नया रास्ता बनाना होगा ताकि दोबारा से इंसानियत को शर्मिन्दा न होना पड़े। इस मौके पर सपा जिलाध्यक्ष प्रमोद त्यागी, लोकसभा प्रत्याशी गौरव स्वरूप, कामरेड श्यामबीर राठी, ज्योतिषाचार्य पंडित विष्णु शर्मा, कांग्रेस नेता कस्तूर सिंह स्नेही, हाफिज फुरकान, जमालुद्दीन कासमी, जमीयत उलेमा के जिलाध्यक्ष मुफ्ति बिन यामीन, मौलाना जाकिर, मौलाना आकिल सदर शामली, मौलाना मुस्तकीम, मौलाना अरशद, कारी जाकिर सहित अनेक वक्ताओं ने भी विचार रखे। सपा जिलाध्यक्ष ने जब इस मौके पर सरकार की उपलब्धियां गिनानी शुरू की तो मदनी ने टोका।

तीन पगड़ियां, तीन पंथ, मकसद एक

शांति के रहनुमा

- अमन व भाईचारा के मंच पर पगड़ी में थीं तीनों शख्सियत

मुजफ्फरनगर के जिला पंचायत सभागार में आयोजित अमन व भाई-चारा कायम करने की गुफ्तगू करते मौलाना महमूद मदनी, स्वामी अग्निवेश व वीएम सिंह। जागरण

जासं, मुजफ्फरनगर : मजहब अलग, पगड़ियों के रंग अलग और कार्यक्षेत्र भी अलग। इसके बावजूद सबका मकसद हर हाल में जिले में अमन व भाईचारे का चिराग रोशन करने का था।

अमन व भाईचारा कांफ्रेंस के मंच पर एक साथ अलग-अलग रंगों की पगड़ियों में शांति के रहनुमा अमन का संदेश देते दिखे। तीनों शख्सियत अमन बहाली के प्रयास के दिशा में कदम उठाने को पूरे समय आपस में गुफ्तगू करते रहे। जिला पंचायत सभागार में जमीयत उलेमा के अमन व भाईचारा कांफ्रेंस में महासचिव मौलाना सय्यद महमूद असद मदनी, वर्ल्ड कौंसिल आर्य समाज दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश व राष्ट्रीय किसान मजदूर संगठन के संयोजक सरदार वीएम सिंह आमंत्रित थे।

मंच पर सफेद पगड़ी में मौलाना महमूद असद मदनी, भगवा पगड़ी में स्वामी अग्निवेश व काली पगड़ी में किसान नेता वीएम सिंह आसीन थे। स्वामी अग्निवेश महर्षि दयानंद के मिशन से जुड़े हैं। पूर्व में बंधुआ मुक्ति मोर्चा संगठन के माध्यम से बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराने की आवाज उठाई। सामाजिक आंदोलनों में उनकी भागीदारी ताकत मानी जाती है।

भगवा रंग त्याग व बलिदान का प्रतीक माना गया है। सफेद रंग शांति का प्रतीक है। दूसरी तरफ मौलाना असद मदनी को कौम का रहनुमा माना जाता है। वहीं, सरदार वीएम सिंह की गिनती देश के किसान नेताओं में है। किसान नेता वीएम सिंह किसानों के हक की लड़ाई लड़ रहे हैं।

यहां तक कि तीनों शख्सियत का मजहब भी अलग-अलग है, लेकिन मंच के माध्यम से उनका उद्देश्य सिर्फ एक था और वह दंगे के दावानल की आग में झुलसा भाईचारा को मरहम लगाकर मजबूती प्रदान करना।

पगड़ी तो करेक्टर है...

किसान नेता वीएम सिंह ने पगड़ी पर कहा कि पगड़ी कैरेक्टर है। आज के दौर में जहां नेता टोपी दूसरे के सिर पहनाकर बेवकूफ बनाने में जुटे हैं। वहीं, उनका मकसद व सोच धर्मनिरपेक्ष भारत का विकास और प्रेम-सौहार्द कायम करना है।

दंगे से होता है इंसान का नुकसान : अग्निवेश

जिला पंचायत सभागार में हुई अमन-भाईचारा कांफ्रेंस

[illegible]

[illegible]

अमन का पैगाम लेकर गांव-गांव जाएं हिंदू-मुस्लिम : मदनी

मुजफ्फरनगर (एसएनबी)। जमीयत उलेमा-ए-हिंद द्वारा जिला पंचायत सभागार में आयोजित अमन-भाईचारा कांफ्रेंस में जमीयत के राष्ट्रीय सैकेट्री मौलाना महमूद मदनी ने कहा कि मुजफ्फरनगर में बीते दिनों जो कुछ भी हुआ उसे भूलकर सभी को अमन का पैगाम लेकर गांव-गांव जाना चाहिए। अमन से ही आपसी भाईचारा बढ़ेगा तथा लोगों के दिलों में जमी नफरत की मैल दूर होगी। जिला पंचायत सभागार में आयोजित अमन-भाईचारा कांफ्रेंस में हरियाणा से आये स्वामी अग्निवेश ने कहा कि दंगे से हमेशा इंसान का नुकसान होता है इंसानियत शर्मिन्दा होती है चंद लोगों ने जो मुजफ्फरनगर एवं शामली को बेवजह दंगे की आग में झोंक दिया इसका खामियाजा सारे समाज को भुगतना पड़ा। अब हम सभी का दायित्व है कि हिंदू मुस्लिम का भेद भुलाकर इंसानियत को आगे बढ़ाने का काम करें तथा गांव-गांव में जाकर सभी को भाईचारे का संदेश दें तभी आपसी भाईचारा बढ़ेगा।

- जिला पंचायत सभागार में आयोजित की गई अमन-भाईचारा कांफ्रेंस

जमीयत उलेमा के राष्ट्रीय सैकेट्री मौलाना महमूद मदनी ने कहा कि अब सब आपसी वैर भाव भुलाकर सिर्फ अमन का पैगाम एक दूसरे को दें। हिंदू भाई मुस्लिमों को समझाये और मुस्लिम भाई हिंदुओं को समझाकर सभी आपस में कदम से कदम मिलाकर चलें। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों हुई घटना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है तथा इससे इंसानियत ही शर्मिन्दा हुई है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व विधायक रतन पाल पंवार ने कहा कि अमन से ही चैन मिलता है बीते दिनों में मुजफ्फरनगर में जो कुछ हुआ है उसे भुलाकर एक नया रास्ता बनाना होगा ताकि दोबारा से इंसानियत को शर्मिन्दा न होना पड़े। किसान नेता एवं सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता वीएम सिंह ने भी कहा कि सभी आपस में भाईचारे को बनाकर चले तथा पुरानी बातों को भूल जाएं। कार्यक्रम का संचालन अजमुल रहमान ने किया।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

www.thearyasamaj.org

Report by : Nirode Bramdaw

World Vedic Conference 2013 at Durban (South Africa)

1. Over 200 foreign and 500 local delegates attended the conference. We had an attendance of over 700 people through out conference sessions

2. The delegates were impressed with the hospitality and high standard of organisation.

3. Every paper was done to a PowerPoint presentation. This helped the audience understand the key points and made the presentations more exciting. The PPT presentations were all prepared by the youth. It was refreshing to see the effective use of modern technology in a Vedic Conference.

4. The March Against Abuse of Women and Children was a huge success. Over a thousand people participated. We marched through the heart of Phoenix and the people at the shopping complex could not help but stop and take notice of the March. Many hooted in support of the messages on the placards.

5. We very pleased that the Alcoholics Anonymous; Narcotics Anonymous; SAPS and the Advice Desk for Abused Women had all taken up stalls to create an awareness and provide easy access for the people to these important social services.

6. Unfortunately the weather turned for the worse on Saturday afternoon. Regardless of the inclement weather we had an attendance of over 800 people at the Communal Hawan. It was broadcast live on Radio Hindvani.

7. For our entertainment in the evenings we had an array of prominent Artistes. The Artistes from India were sponsored by the Indian Cultural Centre in Durban.

8. The Conference session on Science in the Vedas was done by the Youth – Students of KZN University from the department of Engineering. It consisted of comparisons between modern Science as it has evolved and been taught with that of Science found in the Vedas and its supplementary text.

9. There were presentations on The Vedas which made the text simpler to understand. An analysis of the most common practice – the Fire ceremony or Hawan, was done to help in an understanding of its importance and significance. Other Vedic practices that are popular were also discussed to make them more meaningful.

10. Setting aside a day of the Conference for the programme in Phoenix was very well received. The Phoenix programme expressed the intent of the Conference to translate our deliberations into practical implementation among our people.

11. The 1000 Man March against Women and Child abuse was followed by the Hindu Unity Campaign. Leaders of several Hindu Organisations addressed the delegates on the programme they have in place to promote Hindu Unity. Some of the institutions represented were South African Hindu Maha Sabha; Rama Krishna Centre; Divine Life Society; Sai Organisation; Tamil Federation; Chinmaya Mission; Sarva Dharma Ashram and Iskon. These organistions also displayed simple material – Literature; CD's; Pamphlets and books on Hinduism. These were distributed free of charge or sold at nominal rates.

12. Papers presented at the Conference showed that the Vedas are the primary scriptures or cornerstones from which later 'religious beliefs', within the broad umbrella of Hinduism, had their beginnings.

13. The tone and standard set by this World Vedic Conference is a benchmark for other host nations to follow. Singapore will be the host country for the next such Conference.

14. Resolution –The following are some of the key resolutions which covered very sensitive issues.

** On the issue of Euthanasia, the*

बाल एवं महिला शोषण के खिलाफ प्रोटेस्ट मार्च में हजारों लोगों का नेतृत्व करते हुए स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी देवव्रत जी, आचार्य बलदेव जी

प्रो. ऊषा देसाई जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका, आचार्य बलदेव जी, प्रधान, सार्व. आर्य प्रति. सभा (कैप्टन समूह) स्वामी अग्निवेश जी, प्रधान, सार्व. आर्य प्रति. सभा

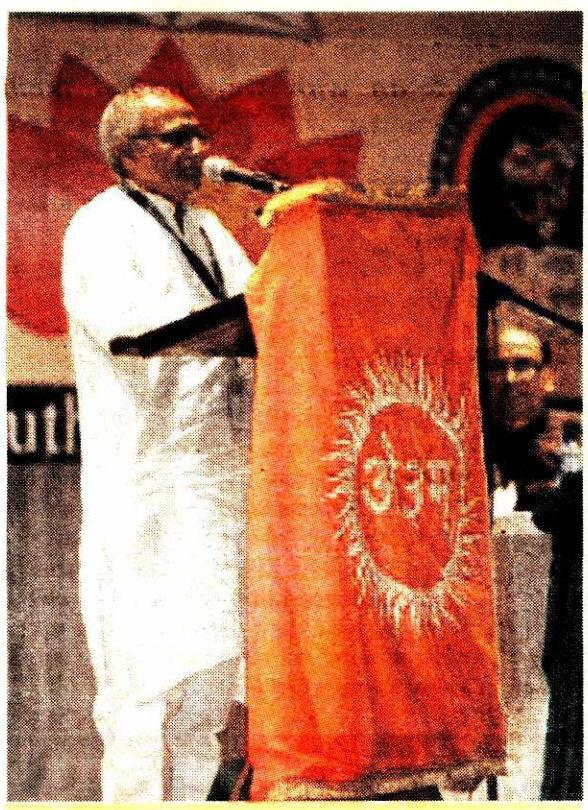

प्रो. विट्ठलराव आर्य, मंत्री, सार्व. आर्य प्रति. सभा उद्बोधन देते हुए

पं. माया प्रकाश त्यागी, सार्व. आर्य प्रति. सभा प्रबन्ध समिति के महामन्त्री, उद्बोधन देते हुए, संयुक्त अध्यक्ष एवं पूरे कार्यक्रम के डाइरेक्टर डॉ. विश्राम राम विलास जी साथ में सार्व. आर्य प्रति. सभा संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी

शेष पृष्ठ 12 पर

www.thearyasamaj.org

Nelson Mandela's death is the death of the Gandhi of our Times

- Swami Agnivesh

New Delhi, 6 December: "Death is something inevitable. When a man has done what he considers to be his duty to his people and his country, he can rest in peace. I believe I have made that effort and that is, therefore, why I will sleep for the eternity." Nelson Mandela 1996 There are only a veiy few people who have a profound effect on mankind and Nelson Mandela was one of those people. Like Gandhijee a believer in forgiveness and non-violent co-existence of all races and creeds Madeeba will always be remembered for leading the emancipation of South Africa from white minority rule and served as his country's first black president, becoming an international emblem of dignity and forbearance, who died Thursday night at the age 95. Globally respected as a symbol of resistance against injustice, Nelson Mandela brought an end to the much-despised apartheid regime in South Africa while spreading the spirii of freedom in the rest of Africa. Inspired by Mahatma Gandhi's principle of Ahinsa, especially his campaign in South Africa, Mandela also preached against violence. When Nelson Mandela was released from prison in 1990, South Africa was a catastrophe waiting to happen. Had Nelson been anything but Mandela - anything but that exquisitely modulated blend of common sense, compassion and authority - the whole place could well have gone up in flames. I remember the days leading up to the 1994 elections, when Zulu impis were marching through the streets of downtown Johannesburg and die-hard racists were planting bombs and threatening a race war. Things were falling apart and the center wasn't holding; South Africa was on the brink of civil war. It's no exaggeration to say that one man held it together. Had it not been for Mandela - for his dedication to the proposition that people can live together despite their differences, as well as for the profound influence he had over black, and increasingly white, South Africans - things might have turned out very, very badly. One man can - and did - make a difference. I was just there in Durban a couple of days ago and it was heartening to see South Africa slowly trans form into a composite world power- this is all due to Madeeba, who was not only the Gandhi but also the Ambedkar of South Africa. It's depressing to think of how many lives might have been saved, had Mandela been able to play a legitimate political role during the 27 years he spent in prison. How millions of kids might have been educated and groomed for productive lives, instead of being thrust into poverty and crime. How so many of the problems facing South Africa today might have been fore-stalled, had an evolutionary political. The socio-political leaders of our country should take out a leaf from Mandela's great but simple life and learn from his message and struggles - how to evolve the society towards equanimity and social justice while not only recognizing but also celebrating the various differences of caste, creed, gender or religion.

– द सिक्ख टाइम्स से साभार

Call to turn Dima Hasao alcohol-free

CORRESPONDENT

HAFLONG, Dec 6 – Governor Janaki Ballav Patnaik today stressed moral education and appealed to the womenfolk of Dima Hasao district to turn the district into an alcohol-free district of Assam by not allowing their near and dear ones to get into the habit of bad habits like drinking, smoking, chewing gutka etc. He also assured the people of Dima Hasao that he would extend all possible help to fulfil their aspirations.

The Governor said this during his visit to Diyungbra in connection with the Rejuvenation Ceremony of the Raja Govind Chandra Aarsh Gurukulam.

In this connection a well-attended meeting was held with Swami Dharmanand Saraswati from Odisha in the chair. Debojeet Thaosen, CEM, NCHAC and Man Sing Rongpi, MLA, attended the meeting as guests of honour. Swami Agnivesh and Sri Puransing Dabash from Delhi attended the meeting as invited guests.

The Governor along with Swami Agnivesh first attended the 'havan' performed in connection with the Rejuvenation Ceremony of the Raja Govind Chandra Aarsh Gurukulam, followed by inauguration of the Martyr Museum.

Speaking on the occasion, Swami Agnivesh laid stress on moral education and appealedto the people indulging in drinking and smoking to give up those evil habits.

Suresh Kumar, acharya of Raja Govind Chandra Aarsh Gurukulam said the place which was once the designated camp of the DHD, was blessed by God. He said the Gurukulam which was started on August 13, now has 90 students with free hostel facilities. Talking about future plans he said the Gurukulam would have a girls' hostel and other curriculum which would help in development of the young minds with moral education, sinceeducation without spirituality and morality is meaningless.

- आसाम ट्रिब्यून से साभार

www.thearyasamaj.org

19 दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष

जरा याद करो कुर्बानी

नौजवानों से एक सवाल

– स्वामी अग्निवेश

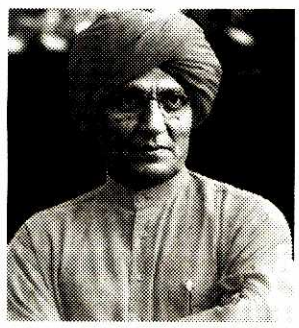

अपनी जिन्दगी, अपनी जवानी किसे प्यारी नहीं होती?किस माँ-बाप को बच्चे प्यारे नहीं होते और किस बच्चे को अपनी माँ का प्यार अच्छा नहीं लगता?पर रामप्रसाद बिस्मिल और अशफ़ाक भारत माँ की आजादी के परवानों की कतार में एक ऐसी बेमिसाल जोड़ी थी जिसे याद करके आज भी आँखों में आँसू छलछला जाते हैं। मादरे हिंद पर फ़िदा होकर अपनी जिंदगी और जवानी हंसते-हंसते कुर्बान करने वाले ये अमर शहीद अच्छे शायर भी थे। 27 साल से कम उम्र में फांसी का फंदा चूमने के कुछ दिन पहले बिस्मिल गोरखपुर की कालकोठरी में अपनी जिंदगी की कहानी लिखते हुए कहते हैं :-

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर,
हमको भी माँ-बाप ने पाला था दु:ख सहकर,
वक्ते रूख़सत उन्हें इतना भी न आया कहकर,
आँख से आँसू जो टपके बहकर
तिफ्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को .....

माँ! हम तुमसे दूर जा रहे हैं, बहुत दूर। जब तुम्हें हमारे सजाये मौत की खबर मिले और तुम्हारा दिल करे कि अपने जिगर के टुकड़े को आखरी बार अपने सीने से लगाकर प्यार कर सको तो माँ तुम्हारे चाहने से तुम्हारा बेटा तुम्हारी गोद में न आ पायेगा। तुम रोओगी छटपटाओगी। तब अपनी आँख से बहते आँसुओं की बूंदों में से एक बूंद को ही हथेली पर रख, उसे ही अपना बच्चा (तिफ्ल) समझ कर दिल को तसल्ली दे देना माँ।

आपके हाथ में एक छोटी सी किताब, एक छोटे से क्रांतिकारी की आत्मकथा है, लेकिन दुनिया के इतिहास में इस तरह की यह दूसरी किताब है (चेकोस्लाविया के अमर क्रांतिकारी फ्यूचिक की आत्मकथा के बाद) जिसे एक क्रांतिकारी, जेल की कालकोठरी में अपनी मौत का आलिंगन करने से कुछ दिन पहले लिखकर किसी उपाय से बाहर भिजवा देता है और अपनी पूरी विरासत आने वाली युवा पीढ़ियों के नाम वसीयत कर दुनिया से कूच कर जाता है।

इस किताब को हमारे देश के स्कूल-कॉलेज में पढ़ने वाले छात्र-छात्रा को जरूर पढ़ना चाहिए। कलम को अपने खून में डुबोकर लिखी यह एक सीधी सच्ची दास्तां है, जो युवा मन-मस्तिष्क को झकझोर कर रख देती है। इतिहास की सबसे खतरनाक साम्राज्यवादी ताकत के शिकंजे से देश को आजाद कराने की राजनीति आदर्शवाद से कितनी प्रेरित थी - आज उसी देश में आजादी के बाद की राजनीति अवसरवाद से कितनी ग्रस्त हो चुकी है, इसका गहरा अहसास इस पुस्तक के पुष्ठों से गुजरते हुए होता है।

आज देश की राजनीति में साम्प्रदायिकता का जहर इस तरह घोला जा रहा है जैसे एक खास सम्प्रदाय के लोग ही अपने को देशभक्ति का ठेकेदार बता रहे हैं और हर मुसलमान ईसाई की देशभक्ति को शक की नजर से देखने-दिखाने की कोशिश हो रही है। इसके ठीक विपरीत आज से केवल 70 वर्ष पहले एक आर्य समाजी राम प्रसाद बिस्मिल और एक मुस्लिम नौजवान अशफ़ाक आर्य समाज शाहजहाँपुर (उ. प्र.) के एक ही कमरे में इकट्ठे रहते थे। एक साथ गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ने का सपना देखते और एक ही थाली में खाना खाते थे। दोनों में सगे भाईयों जैसा प्यार था। दोनों एक ही दिन 19 **दिसम्बर**, 1927 की सुबह हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूमकर शहीद हो गए। इनके साथ उसी दिन अलग-अलग जेलों में शहीद होने वाले दो अन्य क्रांतिकारी थे :- ठाकुर रोशन सिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी। क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद इनकी टोली के सबसे कम उम्र के साथी थे, जो बाद में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में शहीद हुए थे। क्रांति की मशाल में अपने खून से रोशनी बनाये रखने वालों में अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, मदनलाल धींगरा, उधमसिंह, भगवतीचरण वोहरा, शचीन्द्रनाथ सान्याल, जतीन्द्रनाथ (बाधाजतीन), कल्पना दत्त कुमारी, आदि न जाने कितने खेल गये अपने खून से होली। क्या अमर शहीदों की इस विरासत को हम इतनी जल्दी इस पागलपन के साथ बरबाद कर देंगे कि आने वाली पीढ़ियाँ विश्वास ही नहीं कर सकेंगी कि आजादी की बुनियाद में हिन्दू-मुसलमान दोनों की कुर्बानी शामिल है?यदि अंग्रेजों की फूट डालो-राज करो की गंदी कूटनीति ने मुहम्मद अली जिन्ना जैसे की जहर की छड़ी से देश को खण्डित कर दिया तो क्या हम आगे तक उसी साम्प्रदायिक विद्वेष की राजनीति को ढोते रहेंगे या फिर बिस्मिल अशफ़ाक की शहादत से प्रेरणा लेकर साम्प्रदायिक सद्भावना की ऐसी मशाल जलायेंगे जिसकी रोशनी में हर हिन्दुस्तानी, हर पाकिस्तानी, हर हिन्दू - हर मुसलमान और सिक्ख ईसाई, बौद्ध-जैन-बहाई, और भाई-बहन आपस में प्यार-मोहब्बत की तासीर पैदाकर भारतीय उपमहाद्वीप को अंदर से ताकतवर बनाकर दिखायेंगे?

शहीद राम प्रसाद बिस्मिल

शहीद अशफ़ाकउल्ला खाँ

अब आजादी को खतरा पश्चिमी साम्राज्यवाद के एक नये बहुरूपिये चेहरे से है, जो बाजारवाद और वैश्वीकरण के लुभावने नारों कीआड़ में हमारी प्राकृतिक सम्पदा और हमारी प्राचीनतम संस्कृति पर आक्रामक तरीके से वार कर रहा है। उसे मिल रही सफलता का इससे बड़ा क्या प्रमाण होगा कि आज हम अपनी भाषा, वेशभूषा, अपनी सांस्कृतिक निष्ठा, आदि को छोड़कर अंग्रेजी-अंग्रेजियत और अमरीकी अपसंस्कृति में सराबोर होने में गौरव अनुभव करने लगे हैं। पढ़ा-लिखा नौजवान देश छोड़कर विदेश में सेवा करने केसपने लेने लगा है। अपने गौरवशाली इतिहास पर गर्व करने के बदले आत्महीनता की ग्रंथि से पीड़ित हो रहा है। आध्यात्मिक मूल्यों से जीवन को और समाज को महिमामण्डित करने के बादल भोगवादी भौतिकवादी मृगमरीचिका के पीछे अन्धाधुन्ध दौड़ रहा है।

बलिदान की पावन परम्परा में लिखी बिस्मिल और अशफ़ाक की जिन्दगी के कुछ पन्ने आज की युवा पीढ़ी को समर्पित करते हुए क्या मैं आशा करूँ कि सामाजिक बदलाव की चिंगारी आज के नौजवान के दिल-दिमाग में फिर एक बार शोला बनकर भड़केगी एक बार फिर भारतीय उपमहाद्वीप की तरूणाई गरीबी-गैरबराबरी, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नारी उत्पीड़न, बाल मजदूरी के खिलाफ, किसान मजदूर आदिवासी मछुवारों पर हो रहे अन्याय, धार्मिक पाखण्ड और जड़ता आदि के विरूद्ध मुट्ठी भींच कर खड़ी होगी और अपनी जिन्दगी और जवानी को विश्व में सुख-शांति, समृद्धि एवं समता के आदर्शों की स्थापना के लिए खपा देगी?

मरते बिस्मिल, रोशन, लहरी, अशफ़ाक अत्याचार से
होंगे पैदा सैकड़ों इनके रूधिर की धार से।

फांसी पर जाने से पूर्व उन्होंने यह भी शेष पृष्ठ 11 पर

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी पं. राम प्रसाद बिस्मिल एवं अशफ़ाक उल्ला खाँ के शहीदी दिवस के अवसर पर

19 दिसम्बर को साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए

प्रसिद्ध समाजसेवी स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज मुजफ्फरनगर में भव्य कार्यक्रम का आयोजन

19 दिसम्बर को आर्य समाज मार्ग आर्य समाज, मुजफ्फरनगर में सार्वदेशिक सभा के प्रधान और समाज सेवा के क्षेत्र में विश्वभर में प्रसिद्ध स्वामी अग्निवेश जी के आह्वान पर मुजफ्फरनगर में गत दिनों फैली हिंसा के विरोध में तथा दोनों पक्षों में साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने के उद्देश्य से एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन विशेष रूप से 19 दिसम्बर को इसलिए रखा गया कि इस दिन पं. राम प्रसाद बिस्मिल तथा अशफ़ाकउल्ला खाँ ने मिलकर देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्योछावर किये थे। ये दोनों नौजवान आर्य समाज शाहजहाँपुर में एक ही कमरे में इकट्ठे रहते थे और एक ही थाली में खाना खाते थे दोनों में सगे भाइयों जैसा प्यार था और दोनों एक ही दिन 19 दिसम्बर, 1927 को हंसते-हंसते फाँसी के फँदे पर झूल गये।

आज आवश्यकता है पं. राम प्रसाद बिस्मिल और अशफ़ाकउल्ला खाँ से प्रेरणा लेने की। इनके बलिदान से प्रेरणा लेकर साम्प्रदायिक सद्भावना की ऐसी मशाल जलाई जाये जिसकी रोशनी में हर प्रकार की साम्प्रदायिकता जल कर खाक हो जाये।

इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में पहुँचकर बलिदान के इस पावन पर्व पर साम्प्रदायिक सौहार्द को बढ़ाने में अपना योगदान प्रदान करें। इसी तरह का कार्यक्रम दून पब्लिक स्कूल के प्राचार्य आजाद सिंह के नेतृत्व में सोनीपत, हरियाणा में मनाया जायेगा। पैयामेइंसानियत के श्री शहाबुद्दीन और सार्वदेशिक सभा संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता होंगे।

www.thearyasamaj.org

SEARCH GOD THROUGH TRUTH AND LOVE FOR HUMANITY

- Swami Agnivesh

December 06: The renowned social activist and social reformer Swami Agnivesh delivered a speech on "Value system in education and role of the society" in the University of Science and Technology, Meghalaya today.

While delivering his speech to students & faculties of USTM, Swami Agnivesh recalled and narrated interesting episodes of his early childhood and his adolescent period and the process of his evolution from intellect of common man to higher level of spirituality.

Swami Agnivesh an antagonist of religious orthodoxy urged upon students community to rise above religious blindness and seek spirituality through truth and love to humanity. Swamiji had also discussed about Religious issues. He said, " Religion today is like a department, it a multi million dollar business. All the religions priests, mullahs, fathers today pray on behalf of their religion's or community's people. People today are so busy to communicate with God itself. God is truth, love, justice and compassion."

सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी का स्वागत करते हुए ई.आर.डी. फाउण्डेशन गुवाहाटी के वाईस चान्सलर श्री महबूबुल हक

Swamiji further continued and mentioned the gathering to try to think about themselves and find an inner peace in them.

He also said, "One should have a mission in their life. A person should be a missionary. Education also should have mission in the lives of youth. Education without values and mission is counter productive. One should be like Jesus in their lives." He ended his speech By asking a question to the gathering "Who I am."

Starting his career as a teacher in Saint Xavier's College Kolkata, Swami Agnivesh went on to become Education Minister of Haryana and started his crusade against the evil practice of bonded labourer in 1977 .For furtherance of religious tolerance and promoting goodwill and fellow feeling among the communities Swami Agnivesh had established a multi religious organisation named Religions for Social Justice.

Earlier Prof. P.K. Abdul Azis ,Vice Chancellor, USTM extended his welcome address. Finally, the vote of thanks was expressed to Swamiji by Mahbubul Hoque, Chancellor of USTM. He expressed his gratitude to Swami Agnivesh Ji and thanked him for sparing his esteemed time.

The talk was also attended by other high officials of the University apart from a large number of students & the Faculty members.

आर्य समाज सेवा कार्यों से जोड़े आमजन को

- अर्जुनदेव चड्ढा

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के द्वारा समाज में आर्य समाज की भूमिका को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित कर दिया एवं कहा कि विश्व का समष्टि गत कल्याण ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्य समाज का जो एक सच्चा धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रवादी व मानवतावादी संगठन है उसका वर्तमान में वैसा प्रचार नहीं है जैसा होना चाहिए।

यद्यपि आर्य समाज द्वारा अपनी हजारों संस्थाओं के माध्यम से समाज से पाखण्ड, अन्धविश्वास हटाने के साथ-साथ वेद के प्रचार का कार्य किया जा रहा है किन्तु उसका वह परिणाम नहीं दिखाई दे रहा है जो इसकी स्थापना के समय सोचा गया था। यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाए तो इसका कारण है आर्य समाज द्वारा अपने कार्य को लोगों तक बेहतर ढंग से नहीं पहुँचा पाना। आज भी समाज में अधिकांश लोग यही मानते हैं कि आर्य समाज ईश्वर को न मानने वाली संस्था है और जो थोड़े बहुत शिक्षित जन इससे परिचित हैं वे भी यही मानते हैं कि यह अंधविश्वास को न मानने वाली और हवन कराने वाली संस्था है।

इसका सबसे बड़ा कारण है आज आर्य समाज ने अपने सामाजिक सरोकार को लगभग छोड़ ही दिया है और जो थोड़े बहुत कार्य किये जा रहे हैं उनकी स्थिति ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। उनमें भी अधिकांश कार्य आर्य समाज की चार दिवारी के अंदर ही किये जाते हैं, इस कारण समाज के लोगों का सीधा आर्य समाज से कोई जुड़ाव नहीं हो पाता है।

आर्य समाज द्वारा वर्तमान में अधिकांशत: किये जाने वाले कार्यों में यज्ञ, हवन तथा वार्षिकोत्सव पर भजन एवं प्रवचन का आयोजन है जिनमें अधिकतर केवल मात्र आर्य समाजी ही सम्मिलित होते हैं, समाज के अन्य वर्ग नहीं।

यदि देखा जाए तो हमारे वर्तमान में कार्य आर्य समाज के छठे नियम के उद्देश्य को उस रूप में व्यक्त नहीं करते हैं जिसका निर्धारण महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना के अवसर पर किया था।

यदि हमें आर्य समाज का प्रचार-प्रसार कर उसे जन-जन तक पहुँचाना है तो हमें अपने द्वारा किये जा रहे कार्यों में समाज सेवा और सामाजिक सरोकार के कार्य को अनिवार्य रूप से सम्मिलित करना होगा।

इतिहास साक्षी है कि मात्र समाज सेवा के कार्यों को अपनाकर ही ईसाई मिशनरियों ने ईसाइयत को दुनियाँ के कोने-कोने तक पहुँचा दिया है। हमारे कहने का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि हम भी ईसाई मिशनरियों के समान छल का प्रयोग कर अपने उद्देश्य को पूर्ण करें। किन्तु उनसे इतनी शिक्षा तो ले ही सकते हैं कि हम समाज सेवा के ऐसे ऐसे कार्यों को करें जिससे आम आदमी का हमसें सीधा जुड़ाव हो सके और आर्य समाज के बारे में फैली भ्रांति का उसके मन से निवारण हो सके तथा वह भी इस महान ऐतिहासिक आंदोलन से जुड़कर अपने को गौरवान्वित अनुभव करे।

इसलिए अब समय आ गया है कि हम अपने समाज सेवा के कार्यों को प्रमुख स्थान प्रदान करें, क्योंकि जब तक हम लोगों की सामाजिक उन्नति नहीं करेंगे तब तक उनकी आत्मिक उन्नति की कल्पना करना ही व्यर्थ है।

इस मामले में हम आर्य समाज कोटा के उदाहरण को आदर्श रूप में ले सकते हैं जहां जिले में स्थित बारह आर्य समाजों द्वारा एकजुट होकर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में वर्षभर समाजसेवा के कार्यों को किया जाता है। कुष्ठरोगियों की बस्ती मे यज्ञ करना, उनको वस्त्र तथा खाद्य सामग्री प्रदान करना, निराश्रित बालगृहों में वस्त्र तथा अन्य दैनिक जीवन की वस्तुएं प्रदान करना, सरकारी तथा निजी विद्यालयों में नि:शुल्क पाठ्यसामग्री का वितरण करना, सर्दी में ठिठुरते हुए रात को फुटपाथ पर सोने वाले लोगों को कंबल बांटना और ओढ़ाना, अनाथ तथा जरूरतमंदों को नये तथा पुराने वस्त्र वितरित करना, महिलाओं को वस्त्र वितरण तथा उनके सशक्तिकरण के लिए प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन, विकलांगों को सहायता उपलब्ध कराना, प्रतिवर्ष बरसात में वृक्षारोपण करवाना, समय-समय पर विभिन्न रोगों के उपचार के लिए चिकित्सा शिविरों का आयोजन, रक्तदान शिविरों का आयोजन सेरीब्रल पाल्सी शिविरों का आयोजन, युवाओं के लिए आत्मरक्षा शिविरों का आयोजन, जेल में जाकर बंदियों के लिए कम्बल वितरण तथा समय-समय परउनके लिए यज्ञ व प्रवचनों का आयोजन, पक्षियों के लिए ग्रीष्म ऋतु में कोटा नगर में स्थान-स्थान पर परिण्डों को बांधना, दलित बस्तियों में यज्ञों का आयोजन तथा उनकी समस्याओं का निराकरण करवाना, नशामुक्ति तथा बाल विवाह रोक के लिए अभियान चलाना, योग कक्षाओं का आयोजन जैसे अनेक समाज सेवा के कार्य कोटा में आर्य समाज द्वारा किये जा रहे हैं।

यहां तक कि सामान्य रूप से आर्य समाज द्वारा अपने वार्षिकोत्सव भी आर्य समाज में मंदिर परिसर में ही मनाये जाते रहे हैं। यद्यपि उदाहरणस्वरूप आर्य समाज तलवण्डी कोटा जो अपने वार्षिकोत्सव का आयोजन हनुमान मंदिर परिसर में करता है जहां बिना किसी रोकटोक के आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार किया जाता है।

आर्य समाज विज्ञान नगर के वार्षिकोत्सव में उपस्थित होने वाले 75 प्रतिशत से अधिक लोग गैर आर्य समाजी होते हैं। इसके लिए एक विस्तृत कार्य योजना बनाई जाती है। आर्य समाज द्वारा कोटा शहर के व्यस्तम चौराहों एवं सार्वजनिक स्थानों पर यज्ञ एवं प्रवचनों का आयोजन किया जाता है।

वेद प्रचार का कार्य आर्य समाज के अतिरिक्त विद्यालयों में जाकर भी किया जाता है। सरकारी तथा निजी विद्यालयों में कार्यशाला आयोजित कर छात्रों तथा अध्यापकों को वेद और वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान प्रदान किया जाता है।

कोटा के प्रसिद्ध राष्ट्रीय दशहरे मेले में महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति द्वारा प्रतिवर्ष वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र तथा चित्र प्रदर्शनी लगाई जाती है। लगभग 20 दिन चलने वाले इस मेले में प्रतिदिन 30 से 40 हजार लोग आते हैं।

ये कुछ उदाहरण मात्र हैं कि किस प्रकार समाज सेवा के कार्यों के द्वारा लोगों को अधिक से अधिक आर्य समाज से जोड़ा जा सकता है। समाज सेवा के ये कार्य सीधे लोगों के मन में घर करते हैं।

दूसरी एक और मुख्य बात है कि आज के इस व्यावसायिक युग में एक बात कही जाती है जिसका विज्ञापन और मार्केटिंग अच्छी होती है, उसका ही सामान बिकता है। आर्य समाज जिसके पास विश्व की सर्वश्रेष्ठ धरोहर वेद, ऋषियों के सिद्धान्त, संस्कार और संस्कृति है आज उसकी बात से आम जनता अपरिचित है। इसका कारण है हमारे द्वारा सही प्रचार-प्रसार नीति को नहीं अपनाना। आज भी हम राष्ट्रीय और क्षेत्रीय इलेक्ट्रोनिक एवं प्रिन्ट मीडिया से दूर हैं। हमारे विद्वानों द्वारा लिखित लेख हमारी ही पत्र-पत्रिकाओं में छपते हैं जिन्हें हम आर्य समाजी ही पढ़ते हैं। हमारे कार्यों को हम कभी मीडिया और प्रेस के सामने नहीं लाते हैं।

स्वामी रामदेव जी का उदाहरण हमारे सामने है, किस प्रकार आपने मीडिया का प्रयोग कर योग को जन-जन तक पहुँचाया है। एक बड़ी प्रसिद्ध कहावत है कि जंगल में मोर नाचा किसने देखा। हमें प्रेस और मीडिया का प्रयोग कर मोर को नाचते हुए दिखाना होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे प्रत्येक कार्यक्रम को प्रेस और मीडिया के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाना होगा। हमें जंगल में नाचते मोर को लोगों को दिखाना होगा अर्थात् आर्य समाज को चार दिवारी में किये जा रहे कार्य को आम आदमी तक पहुँचाना होगा तभी वह आर्या समाज के निकट आ पायेंगे।

इसलिए हे ऋषि पुत्रों! अब समय आ गया है कि ऋषि के ऋण से कुछ उऋण होने के लिए हम अपनी कार्यशैली में परिवर्तन करें और समाजसेवा के कार्यों को आधार बनाकर आम व्यक्ति तक आर्य समाज को पहुँचायें, जिससे अधिक से अधिक लोगों तक वेद ज्ञान का सूर्य पहुँच सके और निश्चय कर लें कि हमारा प्रत्येक कार्य प्रेस तथा मीडिया के माध्यम से अनिवार्य रूप से प्रत्येक जन तक पहुँचें और इसके लिए सबसे बड़ी जरूरत है कि हम आर्य समाज की चार दीवारी से बाहर निकलें और देखें कि कितना बड़ा विशाल भारत टकटकी लगाये आप की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है।

- जिला प्रधान, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा,
4-ए-28, विज्ञाननगर, कोटा-324005 (राज.)
मो.:-9414187428, 0744-2922428

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ–2 का शेष

वैदिक समाजवाद में चिन्ताओं का समाजीकरण

चाहेगा?इसी तरह कोई दुकानदार या फैक्ट्री का समाजीकरण क्यों करवायेगा?बड़े पूंजीपति तो आपका विरोध करेंगे ही पर यह छुटभैय्या पूंजीपति किसान या दुकानदार आदि भी जबरदस्त विरोध करेंगे और आप डंडे के बल पर चाहे समाजीकरण कर ले जायें पर ये लोग हंसी-खुशी समाजीकरण को कदापि स्वीकार नहीं करेंगे। इसका आपके पास क्या उत्तर है?

उत्तर – उत्तर तो हमारे पास एक ही है – वैदिक समाजवाद – केवल इसे समझने की जरूरत है। सबसे पहले तो आपका यह भ्रम दूर होना चाहिए कि जमीन पर वैयक्ति स्वामित्व की प्रथा कोई हजारों साल पुरानी है। सन् 1802 से पहले हमारे देश में खेत पर किसान का स्वामित्व नहीं होता था। समाज सारी जमीन का मालिक हुआ करता था और किसान बटाईदार या जोतदार के हिसाब से खेती करता था और फसल का निश्चित हिस्सा राजा को दिया करता था। जमीन को खरीदने बेचने का अधिकार किसानों को नहीं था क्योंकि वे उसके मालिक नहीं थे। (अस्तु)

जिस छोटे किसान को बाहर से आप एक उत्पादन के साधन का मालिक या स्वामी समझ रहे हैं, उस किसान को जीवन की गहराईयों में यदि आप झांककर देखें तो आपको पता लगेगा कि यह तथाकथित स्वामी हजारों चिन्ताओं का गुलाम है। बीज की चिन्ता, पानी की चिन्ता, खाद की चिन्ता और फसल की कीमत की चिन्ता के साथ उसे अपने बच्चे की पढ़ाई की चिन्ता सताती है, लड़कों के लिए रोजगार की चिन्ता सताती है; जवान लड़की की शादी और दहेज की चिन्ता, गाहे बगाहे कोई बीमार पड़ गया तो दवाई के लिए पैसों की चिन्ता, आज तो जवान है कमा खा रहे हैं, कल को बूढ़े हो गये तो .....?बुढ़ापे की चिन्ता। कहीं किसी बस के नीचे आ गए या और कोई दुर्घटना में हम चल बसे तो हमारे बाद हमारे बीबी और बच्चों का क्या बनेगा?मुहल्ले वाले आयेंगे और रस्म अदायगी के तौर पर दो आँसू बहाकर चले जायेंगे पर अगले दिन कोई झांककर भी नहीं देखेगा कि इनके घर पर चूल्हा जला या नहीं?इस तरह अपने परिवार के अनिश्चित भविष्य की चिन्ता। चिन्ता ही चिन्ता! चारों ओर चिन्ताओं से दबा जा रहा यह औसत किसान, दस्तकार या दुकानदार अथवा इसी हैसियत का कर्मचारी और अध्यापक यौवन की दहलीज पर पाँव रखते ही बूढ़ा होने लगता है, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं और सिर के बाल सफेद होने लगते हैं। जीवन एक नीरस, खोखला और बोझिल श्वासों की धोंकनी बनकर रह जाता है। किसी विशेष कार्य के लिए बिना कर्ज लिए काम नहीं चलता और एक बार कर्ज लेने के बाद कर्ज मुक्त हो पाना बहुत कठिन हो जाता है। कर्ज न चुका पाने की स्थिति में बार-बार जलील होना पड़ता है – आत्म सम्मान कुचला जाता है और मजबूरियों का जहरीला घूंट पी-पीकर वह मौत के करीब पहुँच जाता है। चिता पर तो उसकी लाश एक औपचारिकता के निर्वाह के लिए रखी जाती है – चिन्ताओं की आग में वह पहले ही जल कर राख हो चुका होता है।

वैदिक समाजवाद में ठीक इसके विपरीत एक चिन्ता मुक्त जीवन का वरदान मिलता है। दूसरे शब्दों में उत्पादन के साधनों के समाजीकरण के साथ-साथ राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक की मूलभूत चिन्ताओं का भी समाजीकरण कर दिया जाता है। उपर्युक्त प्रकार की चिन्ताओं को व्यक्ति के सिर से उतार कर समाज अपने ऊपर ले लेता है। मसलन बच्चों की पढ़ाई का मामला है। पूँजीवादी व्यवस्था में प्रत्येक माँ-बाप के ऊपर यह एक बड़ी भारी चिन्ता का बोझ है – इस बोझ को वैदिक समावाद ही दूर कर देता है और राष्ट्र के प्रत्येक बालक-बालिका की शिक्षा-दीक्षा की जिम्मेदारी व्यक्ति के ऊपर न होकर सारे राष्ट्र के ऊपर होती है। बालक की पढ़ाई-लिखाई के साथ उसके रोटी, कपड़े, निवास, पुस्तकादि सारी चिन्ताओं से माता-पिता मुक्त हो जाते हैं। इसके बाद आती है रोजगार की चिन्ता। आज लाखों पढ़े-लिखे युवक बेरोजगारी के शिकार होकर स्वयं भी दुःखी हैं और माता-पिता पर भी बोझ बने हुए हैं। वैदिक समाजवाद रोजगार का मौलिक अधिकार प्रदान कर एक बहुत बड़ी चिन्ता से लोगों को मुक्त कर देता है। इसी तरह बुढ़ापे की पेन्शन निश्चित हो जाने से बुढ़ापे की चिन्ताओं से मुक्ति मिलती है। चूँकि दहेज की प्रथा विशुद्ध पूँजीवादी व्यवस्था की उपज है इसलिए वैदिक समाजवाद में इस चिन्ता से भी मुक्ति मिल जाती है। मँहगाई का सवाल ही नहीं उठता और देश के एक कोने से दूसरे कोने में प्रत्येक वस्तु की कीमत एक होती है – आज की तरह लूट नहीं होती कि एक ही बाजार की दो दुकानों में एक ही वस्तु के अलग-अलग दाम हैं। ऐसे शोषणमुक्त और चिन्तामुक्त समाज के स्वस्थ वायु मण्डल में साँस लेने वाला हरेक नागरिक भी स्वस्थ और प्रसन्न होता है और यदि कभी कोई शारीरिक कष्ट हुआ भी तो निःशुल्क चिकित्सा द्वारा उसके स्वास्थ्य की रक्षा हो जाती है। न्याय के क्षेत्र में भी इसी तरह मौलिक परिवर्तन आ जाता है। आज की पूँजीवादी व्यवस्था में तो यह है कि यदि आपके साथ कोई अन्याय हो तो सबसे पहले थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए आपको थानेदार को कुछ भेंट पूजा करनी होगी, फिर वकील साहब की फीस भरनी पड़ेगी और तब जाकर न्यायालय में सुनवाई शुरू होगी – न्याय मिले या न मिले और मिले तो कब तक मिले, इसका कुछ पता नहीं – पेशी पर पेशी, तारीख पर तारीख लगती जायेगी और सालों साल चलने वाले मुकदमों में पैसा पानी की तरह बहाना पड़ेगा। गरीब आदमी तो बेचारा अन्याय सहकर रह जाता है क्योंकि अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए उसके पास "पैसा" नहीं है। कई बार तो ऐसा भी होता है यदि हिम्मत करके मुकदमा लड़ता भी है तो जितनी आर्थिक क्षति उसकी उस अन्याय के कारण हुई थी उससे अधिक आर्थिक क्षति उसकी मुकदमेबाजी में हो जाती है। वैदिक समाजवाद न्याय को सर्वथा निःशुल्क कर गरीब किसान मजदूर आदि के लिए भी एक बहुत मौलिक राहत का काम करता है।

इस तरह आप तुलना करके देखें तो पता चलेगा कि एक तरफ तो किसान को दो-चार एकड़ जमीन का स्वामित्व है और उसके साथ समस्त चिन्ताओं का उसके सिर पर भारी बोझ है जिसके नीचे वह पिस रहा है, छटपटा रहा है – दूसरी तरफ बिना वैयक्तिक स्वामित्व के यह चिन्तामुक्त निश्चिन्त जीवन है जिसमें वह मस्त होकर गाता है, अपनी प्रतिभा का विकास करता है तथा भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक साधना के पथ पर अग्रसर होता है।

इसके अतिरिक्त छोटे किसानों को इस पूँजीवादी व्यवस्था में बीज के नाम पर, बिजली के नाम पर, खाद और पानी के नाम पर लूटा जाता है। पूँजीपतियों के फार्मों में पैदा होने वाली फसल को सरकार के बैठे पूँजीवादी दलाल 'बीज' की मोहर लगाकर आठ से दस गुनी कीमत पर किसानों को बेचते हैं, सरमायेदारों की फैक्ट्री में बिजली 50 पैसे यूनिट देते हैं, तो किसान के ट्यूबवेल में 5 रुपये यूनिट के हिसाब से देते हैं, रासायनिक खाद की कीमत पूँजीपति लगाते हैं। इसी तरह नहर आदि के पानी में बड़ा जमींदार अधिक हिस्सा ले लेता है और छोटा किसान टापता रह जाता है। उसके खून पसीने के कमाई की कीमत भी सरकार के वे अफसर लगाते हैं जो राजधानी की एयरकंडीशन्ड कोठियों में बैठकर तय करते हैं जिन्हें यह भी पता नहीं होता कि गेहूँ या धान का पौधा होता है या पेड़। इसी तरह छोटे-छोटे दुकानदारों को भी भ्रष्ट अफसरशाही और दुष्ट नौकरशाही के चंगुल में फंसाकर यह पूँजीवादी व्यवस्था उनके जीवन की खुशियाँ छीन लेती है। एक-एक दुकानदार पर आठ-आठ इंस्पेक्टर, कोई इन्कमटैक्स इंस्पेक्टर तो कोई सेल्सटैक्स इंस्पेक्टर तो कोई माप इंस्पेक्टर। इन इंस्पेक्टरों की आवाभगत में ही छोटे दुकानदार का कचूमर निकलने लगता है। छोटे दस्तकार, कपड़ा बुनने वाले जुलाहे या जूता बनाने वाले चमार या लकड़ी का काम करने वाले बढ़ई, मिट्टी का काम करने वाले कुम्हार आदि की भी हालत बेहद खस्ता हो रही है – बड़े-बड़े पूँजीपतियों की बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों में बन रहे कपड़े, जूते, बर्तन आदि का वेतन उत्पादन क्षमता में मुकाबला कर पाते और न ही उनके सस्ती कीमतों का ही मुकाबला कर पाते। अपने उखड़ते हुए उद्योग और लड़खड़ाते परिवार को देखकर बेचारे मन मसोस कर और आँसू के घूँट पीकर रह जाते हैं।

इस तरह यदि वास्तविकता को देखा जाये तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि छोटा किसान, छोटा दस्तकार और छोटा दुकानदार अपने लिये बेशक कुछ साधनों का स्वामी है पर इस स्वामित्त्व की एवज में जो चिन्ताओं का पहाड़ वह ढो रहा है, जिस अनिश्चितता और शोषण के षड्यन्त्र का वह शिकार हो रहा है – उनसे वह मुक्त होना चाहता है, छुटकारा पाना चाहता है। जब वह दुःखों का मारा वैदिक समाजवाद की ओर आकर्षित होता है तो बड़े-बड़े पूँजीपति और उनके दलाल इन्हें डराते हैं, बहकाते हैं और कहते हैं कि इस समाजवाद में तुम्हारी सम्पत्ति छीन ली जायेगी और तुम्हें गुलाम बना लिया जायेगा। अपने लूट की सम्पत्ति को समाजवादी क्रान्ति से बचाने के लिए ये धूर्त छोटे किसानों और दस्तकारों को वैदिक समाजवाद के बिरोध में खड़ा करना चाहते हैं। जरूरत इस बात की है कि हमें आगे बढ़कर अपने गरीब और शोषित भाईयों को समाजवाद के सभी पहलुओं से परिचित करायें और उन्हें इस सच्चाई का एहसास करायें कि वैदिक समाजवाद में उनका कुछ भी नहीं छीना जायेगा। व्यक्तिगत के बदले सामूहिक या राष्ट्रीय स्वामित्व स्वीकार करने में उन्हें वह बहुत कुछ मिल सकेगा जो वे इस पूँजीवादी व्यवस्था में कभी हासिल नहीं कर सकते।

हमारा यह अनुभव बताता है कि इन पूँजीवादी दलालों के सारे मिथ्या प्रचार के बावजूद भी जब हम अपने छोटे किसान और दस्तकार भाईयों को यह समझाते हैं कि इस नई व्यवस्था से उन्हें क्या मिलेगा, अपने उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्त्व के स्थान पर सामूहिक स्वामित्व मान लेने से उनके खेत आदि समुद्र में नहीं फेंक दिये जायेंगे बल्कि ये सारे साधन यहीं रहेंगे और उन्हें अधिकार होगा काम का और काम के पूरे दाम का। जब उनकी समझ में यह आ जाता है कि उनके छोटे-छोटे उत्पादन के साधनों के समाजीकरण के साथ-साथ उनकी बड़ी चिन्ताओं का भी समाजीकरण हो जायेगा, और वे एक चिन्तामुक्त, एक शोषण मुक्त, नये युग में, नये जीवन में प्रवेश करेंगे तो उनका हृदय उल्लास और उत्साह से भर जाता है और वे बड़ी प्रसन्नता से अपने साधनों पर इस पूँजीवादी स्वामित्व के खोखले अधिकार को छोड़कर अन्य श्रमजीवियों के साथ इस महान समाजवादी क्रान्ति की सफलता के लिए कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने के लिए तैयार हो जाते हैं।

ये विचार महज ख्याली पुलाव नहीं है जिन्हें आप या आपके परवरदिगार वेद और राजधर्म के पन्नों पर दीमक बनकर चाट जायें। क्रान्ति की आग सुलग चुकी है और बड़ी तेजी से इसकी चिन्गारियाँ देश के कोने-कोने में बैठे युवा मन-मस्तिष्कों को आन्दोलित कर रही हैं। अन्दर ही अन्दर धधक रही इस क्रान्ति की भीषण आग को अब किसी भी कीमत पर बुझाया नहीं जा सकता, दबाया नहीं जा सकता। उचित अवसर पर उचित नेतृत्व पाकर यह एक प्रचण्ड ज्वालामुखी की तरह विस्फोट करेगा और सदियों से जमा हुए कीचड़ और सड़ी गली व्यवस्था को बाहर फेंक कर इस रत्नगर्भा धरती के अन्तस्तल से एक नये स्वर्णिम युग का सूत्रपात करेगा।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

पृष्ठ–8 का शेष

जरा याद करो कुर्बानी नौजवानों से एक.....

कहा था – ''भारत माता के रंगमंच पर अपना पार्ट अब हम अदा कर चुके। हमने गलत सही जो कुछ किया, वह स्वतन्त्रता प्राप्ति की भावना से किया। हमारे इस काम की कोई प्रशंसा करेगा तो कोई निन्दा करेगा, किन्तु हमारे साहस और वीरता की प्रशंसा हमारे दुश्मनों तक को करनी पड़ी है। क्रान्तिकारी बड़े वीर योद्धा और बड़े अच्छे वेदांती होते हैं। वे सदैव अपने देश की भलाई सोचा करते हैं। लोग कहते हैं कि हम देश को भयत्रस्त करते हैं, किन्तु बात ऐसी नहीं है। इतनी लम्बी मियाद तक हमारा मुकदमा चला मगर हमने किसी एक गवाह तक को भयग्रस्त करने की चेष्टा नहीं की, न किसी मुखबिर को गोली मारी। हम चाहते तो किसी गवाह, किसी खुफिया पुलिस के अधिकारी या किसी अन्य ऐसे आदमी को मार सकते थे। किन्तु यह हमारा उद्देश्य नहीं था। हम तो कन्हाईलाल दत्त, खुदीराम बोस, गोपी मोहन साहा, आदि की स्मृति में फांसी पर चढ़ जाना चाहते थे।

''जजों ने हमें निर्दय, बर्बर, मानव कलंक, आदि विशेषणों से याद किया है। किन्तु हम पूछते हैं कि क्या इन जजों ने जलियाँवाला बाग में गोली चलाते देखा या सुना?क्या उसने निरस्त्र भारतीयों, स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध सब पर गोलियाँ नहीं चलाई थी?कितने जजों ने उसे इन विशेषणों से विभूषित किया। फिर क्या यह मजाक हमारे ही साथ उड़ाने को है?

''भारतीय भाईयों, आप कोई हों, चाहे जिस धर्म या सम्प्रदाय के अनुयायी हों, परन्तु आप देशहित में एक होकर सहयोग दीजिए। आप लोग व्यर्थ में लड़-झगड़ रहे हैं। सब धर्म एक हैं, रास्ते चाहे भिन्न-भिन्न हों, परन्तु लक्ष्य सबका एक ही है। फिर यह झगड़ा-बखेड़ा क्यों?हम मरने वाले काकोरी के अभियुक्तों के लिए आप लोग एक हो जाइये और सब मिलकर नौकरशाही का मुकाबला कीजिए। यह सोचकर कि सात करोड़ मुसलमान भारतवासियों में मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ जो भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए फांसी पर चढ़ रहा हूँ, मैं मन की मन अभिमान का अनुभव कर रहा हूँ। किन्तु मैं यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मैं हत्यारा नहीं था, जैसा कि मुझे साबित किया गया है।

''अब मैं विदा होता हूँ। ईश्वर आप सबका भला करे। इस अवसर पर ऐनुद्दीन मजिस्ट्रेट, श्री खैरात अली पब्लिक प्रासीक्यूटर, सी. आई. डी. के अधिकारी खासकर खान बहादुर तसद्दुक हुसैन साहब तथा अन्य गवाहों को धन्यवाद देना अनुचित न होगा, क्योंकि इन्हीं की कृपा से हमको यह मान-मर्यादा प्राप्त हुई। मेरे परिवार में आज तक देश सेवा के लिए कोई त्याग न हुआ था। अब यह कलंक छूट जायेगा। अन्त में अपने साथी अभियुक्तों तथा मुखबिरों और इकबाली मुल्जिमों से भी 'वन्दे' करता हूँ।

''सबको आखिरी सलाम। भारतवर्ष सुखी हो मेरे भाई आनन्द लाभ करें।''

अशफ़ाक चले गऐ, लेकिन वे देशवासियों के नाम जो संदेश छोड़ गये, उससे हम कुछ ग्रहण कर सकें तो अच्छा है।

– अशफ़ाक और उनका युग से साभार
– 7 जन्तर-मन्तर रोड, नई दिल्ली-1

संशोधित निविदा सूचना

महर्षि दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर दिनांक 5-12-2013 को प्रकाशित की नई निविदा में www.mdu.edu.in की जगह www.mdc.edu.in पढ़ा जाये।

प्राचार्य, महर्षि दयानन्द पी. जी. कॉलेज, श्रीगंगानगर (राज.)

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

सोहना 6 दिसम्बर, 2013 सोहना क्षेत्र के गाँव दमदमा में भारत रत्न बाबा साहब अम्बेडकर की पुण्य तिथ पर ''दलित जन विकास संगठन के सभी सदस्यों ने बाबा साहब को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की, इस अवसर पर संगठन के महासचिव हंसराज आर्य व वरिष्ठ प्रधान दौलत राम ने अपने-अपने विचार रखे, इस अवसर पर काफी संख्या में लोग मौजूद रहे व संगठन के प्रधान सतीश कुमार व सुनील कुमार का भी योगदान रहा, इससे पहले संगठन के महासचिव हंसराज आर्य ने अक्टूबर महीने में ''वैदिक सार्वदेशिक'' पत्र में छपे लेख ''बंद करें द्रोणाचार्य पुरस्कार'' की सौ फोटो कापी निकलवाकर बांटी व इंदौर से प्रकाशित पत्रिका समय के स्वर में छपवाने के लिए लेख की कटिंग भेजी। वैदिक सार्वदेशिक के लेख अत्यन्त प्रेरणास्पद तथा दिमाग को झकझोर देने वाले होते हैं। मेरा प्रयास रहता है कि यह लेख अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे। मैं अपने सीमित साधनों के द्वारा निरन्तर प्रयासरत हूँ।

– हंसराज आर्य, महासचिव दलित जन विकास संगठन, दमदमा, गुड़गांव, हरियाणा

वैदिक सार्वदेशिक नियमित रूप से प्राप्त हो रहा है। सभी लेख समाज को जागरूक करने वाले हैं। विजय कुमार जैन का लेख शाकाहार से सम्बन्धित 28 नवम्बर से 4 दिसम्बर के अंक में प्रकाशित हुआ है। इनके विचार वास्तव में लोगों को लाभान्वित करने वाले हैं। इसी लेख में डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण जी की शाकाहार की पुस्तक के बारे में भी जानकारी है यह पुस्तक मैं पढ़ना चाहता हूँ। कृपया इसे भेजने का प्रबन्ध करें। मैं धनादेश द्वारा इसका शुल्क भेज रहा हूँ।

–रविन्द्र जैन, गणेश नगर, समरपुर, दिल्ली-92

वैदिक सार्वदेशिक का 21 से 27 नवम्बर, 2013 का अंक प्राप्त हुआ हमेशा की तरह अत्यन्त ज्ञानवर्धक सामग्री इसमें प्रकाशित की गई है। प्रथम पृष्ठ पर ही गुरुनानक देव जी के जन्म दिवस पर कार्यक्रम का समाचार प्रकाशित हुआ है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी का कदम वास्तव में सराहनीय है। आर्य समाज जैसी समाज सुधारक संस्था को अपने महापुरुषों से अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बियों के महापुरुषों को भी निश्चित रूप से सम्मानित करना चाहिए। यह एक स्वस्थ परमपरा का प्रारम्भ है। स्वामी अग्निवेश जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव अत्यन्त उच्चकोटि के हैं। जनता तक इन्हें पहुँचाया जाना चाहिए तथा इनको कार्यरूप में परिणित करने का प्रयास भी होना चाहिए। धन्यवाद।

– प्रीतम सिंह, अमृतसर, पंजाब

दिसम्बर में आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का त्रैवार्षिक अधिवेशन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज खैल बाजार, पानीपत में की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का त्रैवार्षिक चुनाव दिसम्बर में होगा। चुनाव में भाग लेने के इच्छुक प्रतिनिधि फार्म कार्यालय में जमा कर सकते है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोजक स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज खैल बाजार में समाज के प्रतिनिधियों की बैठक में कहा कि 2010 में सभा का चुनाव रोहतक में हुआ था। उस चुनाव के तीन वर्ष पूरे हो रहे हैं, इसलिए दिसम्बर में फिर से चुनाव होगा। अभी तक सभा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी के नेतृत्व में सभा ने समाज के विकास और प्रचार के कई सराहनीय कार्य किए हैं। पूर्व सांसद स्वामी इन्द्रवेश जी के नाम पर एक संस्थान की स्थापना की गई है, जो प्रदेश में फैली सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चला रही है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि 28 से 30 नवम्बर तक दक्षिण अफ्रीका के डरबन में अंतराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में एक प्रभावशाली प्रतिनिधिमण्डल ने शिरकत की। इस मौके पर आर्य समाज खैल बाजार के प्रधान आत्म प्रकाश आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री राम मोहन राय, नरेन्द्र आर्य, ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र, यशबीर शास्त्री, मुरारी लाल, बलराज ऐलाबादी, नवीन गाबा, नरेन्द्र ढींगड़ा, दीपक कथूरिया मौजूद रहे।

www.thearyasamaj.org

NDPSO on 13/14 दिसम्बर, 2013 पोदक सार्वदेशिक 12 से 18 दिसम्बर, 2013
प्रकाशन की तिथि : 12 दिसम्बर, 2013
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

पृष्ठ–6 का शेष

World Vedic Conference 2013 .....

प्रतिष्ठा में :–

रोड

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

संयुक्त अध्यक्ष एवं पूरे कार्यक्रम के डाइरेक्टर डॉ. विश्राम राम विलास जी उद्बोधन देते हुए

स्वामी अग्निवेश जी प्रधान, सार्व. आर्य प्रति. सभा सम्बोधित करते हुए

conference agreed that such terms as "compassionate murder" aptly describe the dilemma. The person going through the agony of a prolonged suffering as state of "Conscious Painful Paralysis" with no quality of life - should be allowed to determine whether he or she wants to prolong such a life or not. The conference was very firm that key members of the family and medical experts need to take such a decision. The choice should not be one of convenience for any one concerned party.

** Organ Transplantation – The conference agreed to promote organ transplantation where it is done voluntarily as an act of compassion towards fellow human beings.*

The conference denounced Human and Organ trafficking for profit as horrible atrocities. Human Trafficking is nothing but buying and selling women and children into slavery. Organ trafficking where children and families who are victims of poverty, are forced to sell their organs (or even killed) for a pittance to have them sold to the rich for huge ransoms is an abominable atrocity. We must support every and any initiative that exposes and brings to justice the perpetrators of this inhumanity.

** Sexual Orientation - The conference expressed concerns that religions were reluctant to discuss the issues of sex and the various ways in which this becomes manifest. All religions are based on compassion and love and we preach being non-judgmental. Therefore we must start by accepting all people who are gay or have a sexual orientation that we consider to be different in any way. Marriage is an age old tradition that prescribes and implies progeny and family. The rites of the ceremony are very clear in their reference to "man" and "woman" and children and household as we know it. The conference was of the view that we need to engage in a dialogue with the gay community to determine whether the term marriage, union or relationship would be more suitable. We also need to discuss how and what form a marriage would take to give legitimacy to such a union.*

Much of the rape and violence against women and children is related to drugs, alcohol and pornography. The delegates agreed that we already have made our voices heard about drugs and alcohol and that we must persevere in our efforts to eradicate this scourge with greater vigor. Every delegate and organization was urged to lobby the governments in their respective countries to ban all forms of pornography and access to pornography.

The conference expressed great concern that there is a general breakdown today in all our human, family and cultural values. These discussions should not be viewed as a further promotion of such a breakdown but rather the willingness of religions to engage in discussions and reach amicable solutions that will help every human being lead an improved quality of life.

भारत से गये हुए संन्यासियों का स्वागत करते हुए दक्षिण अफ्रीका कार्यक्रम के आयोजक

बाल एवं महिला शोषण के खिलाफ प्रोटेस्ट मार्च में हजारों लोगों का नेतृत्व करते हुए स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी देवव्रत जी, आचार्य बलदेव जी

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।